का मासिक पत्र

Photo by K. Arunachalam

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'आओ, आओ तुम्हें खिलाएँ!'

प्रेषक :
विजय कुमार गुप्ता, नई दिल्ली

रु. ४,००० से अधिक ईनाम

पहला ईनाम नक़द	.... रु. १,०००	५ से ९ तक के ईनाम में ए. पी. एल. फ़ोटो सामग्री के रु. १०० की कीमत के वाउचर प्रत्येक को दिये जायेंगे।
दूसरा ईनाम नक़द	.... रु. ७५०	
तीसरा ईनाम नक़द	.... रु. ५००	१० से १९ तक के ईनाम में ए.पी.एल.फ़ोटो सामग्री के रु. ५० की कीमत के वाउचर प्रत्येक को दिये जायेंगे।
चौथा ईनाम नक़द	.... रु. २५०	

इसके अलावा डीलर्स के लिए रु. ६५० के ईनाम हैं

अन्तिम तिथि: ३१ जनवरी १९५७

उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम—हमारे विशाल भारत में विविध जातियों के मनुष्य रहते हैं। उनकी वेषभूषा, उनके गहने, आचार-विचार और उनकी मुखाकृतियाँ एक दूसरे से मेल नहीं खाती हैं। भारत की ऐसी कोई आकर्षक आकृति या उसके जीवन और मनुष्यों का कोई चित्र खींचिए और नये गेवर्ट फ़ोटोग्राफ़ी प्रतियोगिता की भारी रकम जीतिए। आप जितने चाहें उतने चित्र भेज सकते हैं। पर यह आवश्यक है कि वे गेवर्ट फ़िल्म पे हों और कम से कम आधे प्लेट, यानी ४¾"×६½" के गेवर्ट पेपर पर छपे हों। प्रत्येक फ़ोटोग्राफ़ के साथ गेवर्ट फ़िल्म का खाली बक्सा का रहना ज़रूरी है। चित्र केवल भारतीय जातियों और जीवन से संबंधित हों। इस प्रतियोगिता के अन्य विवरण समीप के गेवर्ट डीलर से प्राप्त किये जा सकते हैं अथवा सीधे लिखें:

ALLIED PHOTOGRAPHICS PRIVATE LIMITED

एलाएड फ़ोटोग्राफ़िक्स प्राइवेट लिमिटेड

(पब्लिसिटी डिपार्टमेंट) कस्तूरी बिल्डिंग, जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई-१

इस प्रतियोगिता के अन्य विवरण के लिए रेडियो सिलोन (४१ मीटर बैंड) पर 'फ़ोटो मेला' प्रति बृहस्पतिवार को रात को ८.० बजे सुनिए।

चन्दामामा

अगस्त १९५६

चुरमुरा...
ताजा...
स्वादिष्ट...
बढ़िया बिस्कुट
ब्रिटेनिया

छुट्टियों के दिनों की मधुर स्मृतियाँ

'कोडक' चित्रों में कायम रखिए

छुट्टियों के दिनों में ऐसी-ऐसी बहुत-सी सुन्दर घटनाएँ घटती हैं जिन्हें आप हमेशा याद रखना चाहेंगे। इन घटनाओं के सुन्दर तथा स्पष्ट 'कोडक' चित्र खींचकर उन्हें हमेशा के लिए कायम रखिए।

एक 'कोडक' कैमरे द्वारा सुन्दर व स्पष्ट चित्र बिल्कुल आसानी से खिंचते हैं। कुछ मॉडलों के लैंस तो पहले से ही फ़ैक्टरी में सही फ़ोकस पर बैठा दिये जाते हैं। आपको बड़े व्यूफ़ाइन्डर में से दृश्य निर्धारित कर सिर्फ़ बटन दबाना पड़ता है। और फिर, ये कैमरे कोई मँहगे भी नहीं होते। १७ रुपये ८ आने जैसी मामूली कीमत पर आप एक सुन्दर 'कोडक' कैमरा खरीद सकते हैं।

अपने कोडक-विक्रेता के पास सर्वोत्तम किस्मों के 'कोडक' कैमरे देखिए। आपको अपने योग्य दामों पर अपनी पसन्द का एक-न-एक कैमरा ज़रूर मिल जायगा।

विश्वसनीय 'कोडक' कैमरे से चित्र

हम प्रत्येक व्यक्ति और व्यापारिक संस्थाओं को आश्वासन देना चाहते हैं कि कलात्मक सृजन, स्वच्छतम कार्य-निपुणता, आकर्षणीय छपाई और शीघ्र वितरण हमारा ध्येय है।
*
हिन्दी, अंग्रेज़ी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, मलयालम और उड़िया में छपाई का कार्य किया जाता है।
*
दी बी. एन. के. प्रेस
(प्राइवेट) लिमिटेड
चन्दामामा बिल्डिंग्स :: मद्रास-२६
फोन: ८८४७४

उत्तम प्रकार के

फ़ोटोग्राफ़िक माउण्ट्स

फ़ोल्डर्स, अल्बम्स, कार्नर्स

तथा फ़ोटोग्राफ़ी सम्बंधी सभी सामानों

के बनाने तथा बेचनेवाले

दि ग्रेट इंडिया ट्रेडिंग कं.

२७/३१ मेडोज़ स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बम्बई-१.

ग्राम-PHOTO BOARD

ग्राहकों को एक ज़रूरी सूचना !

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक, चन्दामामा.

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम इस अंक से एक और मनोरंजक कथामाला, जैसा कि हमने वायदा किया था, प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है, इसका भी उसी तरह स्वागत होगा, जिस तरह "चालाक माँ-बेटी" का हुआ था या "बेताल कथाओं" का इस समय हो रहा है।

'सिन्दबाद' की कहानियों से कई पाठक परिचित होंगे। पर कई ऐसी भी कहानियाँ हैं, जो निस्सन्देह उनके लिए नई होंगी। फिर नमक, मिर्च का भी फर्क रहेगा। वह कहानी भी क्या, जिस पर नमक, मिर्च की मोटी परत न हो?

'चन्दामामा' की धारावाहिक कहानियों की अपनी विशेषता है। पाठक इनके प्रति विशेष दिलचस्पी दिखाते हैं। हमारा यह हमेशा प्रयत्न रहा है कि पाठकों को सुन्दर से सुन्दर, उपादेय से उपादेय धारावाहिक कथा-साहित्य देते रहें। पाठकों से हमारी प्रार्थना है कि वे समय समय पर अपने सुझाव हमें लिखते रहें।

अंक : १२

अगस्त १९५६

वर्ष : ७

सुख - चित्र

पांडव काम्यक वन में रहते समय एक दिन द्रौपदी को तृणबिन्दु महामुनि के आश्रम में कुलपति धौम्य के साथ छोड़कर शिकार खेलने जंगल में चले गये। उस समय सैंधव साल्व राजा की पुत्री से शादी करने के लिए सपरिवार काम्यक वन से होकर जा रहा था और उसने तृणबिन्दु महामुनि के आश्रम में द्रौपदी को देखा।

तुरन्त सैंधव ने अपने रथ को रोककर कोटिकाम्य नाम के अपने मित्र को बुलाकर कहा—"देखो, तुम जाकर मालूम करके आओ कि वह स्त्री कौन है।" कोटिकाम्य ने द्रौपदी के पास जाकर सब बातें मालूम कर सैंधव से कहा—"वह पांडवों की पत्नी, द्रौपदी है और पांडव जंगल में शिकार खेलने गये हुए हैं।"

यह सुनकर सैंधव रथ से उतर पड़ा और द्रौपदी के पास जाकर पहले उसके कुशल-क्षेम पूछा। द्रौपदी ने उसके सब प्रश्नों के उत्तर दिये और अन्त में कहा कि आप थोड़ी देर और ठहरिए, वे आते ही होंगे।

पर उस दुष्ट ने कहा—"तुम इस वन में पांडवों के साथ कैसे रह रही हो! चलो मेरे साथ।"

द्रौपदी आगबबूला हो उठी। 'बदमाश! जबान संभाल कर बात कर। नहीं तो मेरे पतिदेव तेरी हड्डी-पसली एक कर देंगे!'—द्रौपदी ने सैंधव से कहा।

सैंधव ने उसकी बातों की कोई परवाह न की। उसने कहा—'जंगलों में मारे मारे फिरनेवालों को देखकर मैं थोड़े ही डरता हूं। सीधी तरह से चले आओ मेरे साथ; नहीं तो मैं तुम्हें बलातपूर्वक ले जाऊँगा।' यों कहकर वह उसे जबर्दस्ती उठाकर अपने रथ के पास ले गया। द्रौपदी असहाय होकर चीखने-चिल्लाने लगी। उसका चिल्लाना सुनकर धौम्य आश्रम से बाहर आया और सैंधव से उसने कहा—'बदमाश! द्रौपदी को छोड़ दो, नहीं तो तुम्हारा बुरा हाल हो जायगा।'

पर सैंधव ने धौम्य की एक भी न सुनी। वह द्रौपदी को अपने रथ में बिठाकर चला गया। धौम्य चिल्लाते चिल्लाते रथ के पीछे दौड़ा।

चुगलखोर

ब्रह्मदत्त जब काशी के राजा थे, तब बोधिसत्व मगध देश के एक गाँव में, क्षत्रिय परिवार में पैदा हुए। उनका नाम माघ था। उस गाँव में क़रीब क़रीब तीस घर थे। गाँववाले एक चबूतरे पर बैठ, गाँव की कार्यवाहियों पर चर्चा किया करते। गाँववाले अधिकतर चोर-डकैत थे। चोरी, हत्याएँ करते, और फिर सरकारी कर्मचारियों को घूस आदि, देकर उनको चुप रखते।

चबूतरे की कोई परवाह न किया करता था। उस पर कूड़ा-कबाड़ पड़ा रहता था। माघ ने यह देख अपने लिये थोड़ी जगह साफ़ की। परन्तु किसी और ने वह जगह ज़बरदस्ती हड़प ली। माघ ने दूसरी जगह साफ़ कर ली। उसे भी किसी और ने हथिया ली। इस तरह माघ को धीमे धीमे सारा का सारा चबूतरा साफ़ करना पड़ा। फिर उसने छाया के लिये चबूतरे पर एक छप्पर भी डाला। गाँववालों को इस प्रबन्ध से बड़ा आराम मिला।

माघ के इस कार्य ने गाँव के सब लोगों का ध्यान आकर्षित किया। सब उसको अगुआ बनाकर ग्राम-सेवा में तत्पर हो गये। सबने मिलकर, बैठने के लिये एक मन्दिर बनाया। प्यास मिटाने के लिये एक पियाऊ भी खोली। वे माघ की देखादेखी, सद्व्यवहार भी करने लगे। चोरी-चारी छोड़ दी। वे रोज़ रास्ता साफ़ किया करते। गाड़ियों के रास्ते में पड़े पेड़-पत्ते भी हटाया करते। गड्ढे साफ़ करते, तालाब खोदते। कीचड़ में चलने के लिये ऊँचा रास्ता बनाते। माघ ये सब कार्य करवाता था और वह उनका नेता और पथ-प्रदर्शक बन गया।

तलवार-कटार, चाकू-लीवर, लेकर इधर उधर खुल्लमखुल्ला घूम रहे हैं। जिस किसी रास्ते पर जाओ, वे ही दिखाई देते हैं। उनके अत्याचारों से जनता तंग आई हुई है। आपको इस बारे में सूचित करना मेरा कर्तव्य है, बाद में आपकी इच्छा।"

राजा ने पटवारी की फ़रियाद पर सोच-विचार किया। उसके साथ सौ सिपाहियों को भी भेजा, ताकि अगर पटवारी की शिकायत सच हो तो वे गाँववालों को पकड़कर ला सकें। गाँव में आने से पहिले उनको रास्ते में माघ और उसके अनुयायी दिखाई दिये। हर किसी के हाथ में या तो फावड़ा था, नहीं तो कुल्हाड़ा। सैनिकों ने बिना किसी पूछताछ के उनको पकड़ लिया। हाथ-पैर बाँधकर, उनको राजा के सामने पेश किया।

उस गाँव का एक पटवारी भी था। जब गाँव के नौजवान शराब पी-पाकर, जुआ, खेला करते थे, क़त्ल किया करते थे, चोरी-डाके डाला करते थे, वह मौके ब मौके उनसे खूब घूस लेकर अच्छा कमाता था। पर जब से गाँववाले माघ की सुनकर, अच्छे व्यवहार में प्रवृत्त हो गये थे तब से पटवारी की आमदनी बहुत घट गई थी। इसलिये पटवारी ने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज! हमारे गाँव में अराजकता फैल रही है। माघ नाम के एक लड़के के हुक्म पर गाँववाले बरछे-भाले

राजा, उनके हाथ में फावड़े और कुल्हाड़े देखकर, यह न सोच सका कि वे उनका ग्राम-सेवा के लिए उपयोग कर रहे थे। उसको पटवारी की शिकायत पर विश्वास हो गया। इसलिये उसने भी उनकी कुछ न सुनी। उसने हुक्म दिया—"इन दुष्टों को हाथियों के पैरों के नीचे दबवाकर मरवा दो।"

माघ और उसके साथियों को मरवाने के लिए एक बड़े मोटे-ताज़े हाथी को लाया गया। वह उनके पास आया, पर उनको देखते ही चिदक कर पीछे भागने लगा। एक और हाथी लाया गया। वह भी भाग गया। यह देखकर सब को बड़ा आश्चर्य हुआ।

यह ख़बर राजा के पास भी पहुँची। उस मूर्ख राजा ने सैनिकों को आज्ञा दी—"हो सकता है कि इन लोगों ने अपने शरीर पर तावीज़ वगैरह, बांध रखे हों। इसलिये ही हाथी उनके पास नहीं जा रहे हैं। इनकी तलाशी लो। अगर कोई ऐसी चीज़ हो तो निकाल फेंक दो। और फिर उन्हें मोटे-ताज़े हाथियों के पैरों के नीचे दबवाओ।"

परन्तु किसी के शरीर पर कोई छोटा-मोटा तावीज़ भी न था। यह सुन राजा ने कहा—"अपराधियों को मेरे पास भेजो।" माघ और उनके तीस साथी राजा के सामने हाज़िर किये गये।

"हाथी तुम्हें कुचलने के लिए क्यों डर रहे हैं! ऐसा मालूम पड़ता है कि तुमने कोई मन्त्र उनपर फ़ूंका है। क्या यह सच

है! क्या तुम कोई मन्त्र-तन्त्र जानते हो?"—राजा ने उनसे पूछा।

इस प्रश्न का माघ ने इस प्रकार उत्तर दिया:

"महाराज! आप ठीक कह रहे हैं। हम एक बड़ा मन्त्र जानते हैं। उससे बढ़कर इस संसार में कोई और मन्त्र नहीं है।"

"क्या है वह मन्त्र!"—राजा ने उत्कण्ठापूर्वक माघ से पूछा।

"हम में से कोई भी जीव-हिंसा नहीं करता है, कोई भी चोरी नहीं करता है,

बदचलन में नहीं फँसता है। झूठ नहीं बोलता है, न नशीली चीजें ही खाता-पीता है। हम प्राणी-मात्र से प्रेम करते हैं। हम दान करते हैं। मार्ग ठीक करते हैं। तालाब खोदते हैं। धर्मशालाएँ बनाते हैं। यह ही हमारा मन्त्र है, यह ही हमारा बल है।"—माघ ने कहा।

राजा यह सुन हैरान हो गया। उसने कहा—"ओह! यह क्या! हमने तो सुना था कि तुम राहगीरों पर हमला करते हो, लोगों को सताते हो!"

"आपने जो सुना, उस पर झट विश्वास कर लिया। किसी से कुछ कहा-सुना भी नहीं।"—माघ ने कहा।

"जब हमारे सिपाहियों ने तुम्हें पकड़ा तब तुम्हारे हाथ में फावड़े, कुल्हाड़े वगैरह थे। इसलिये पूछताछ की कोई ज़रूरत ही न थी।"—राजा ने कहा।

"ये ही हमारे साधन हैं। अगर रास्ते में पेड़ वगैरह पड़े हुए हों तो हम उन्हें कुल्हाड़ियों से काटकर अलग कर देते हैं। तालाब खोदने, रास्ते बनाने, और धर्मशाला बनाने के लिए हम हमेशा अपने पास आवश्यक साधन रखते हैं।"—माघ ने कहा।

इसके बाद, राजा ने उनसे पूछताछ करके सच मालूम कर लिया। यह साबित हो गया कि पटवारी का दोषारोपण झूठ था। उसने सालों से जो झूठी कमाई जमा कर रखी थी, उसको राजा ने नवयुवकों को देते हुए कहा—"अब से तुम ही अपने गाँव के मालिक हो। सब काम तुम्हीं देख लो। मैं किसी और कर्मचारी को गाँव के शासन के लिए नियुक्त नहीं करूँगा।" राजा ने उस हाथी को भी, जो उन्हें कुचलने के लिए लाया गया था, गाँववालों को भेंट में दे दिया।

चोर मुनि

एक रईस जब परदेश से लौट रहा था तो उसको एक पेड़ के नीचे एक मुनि बैठा हुआ दिखाई दिया। उसको यह न मालूम था कि वह मुनि ढोंगी था। रईस ने उसके सामने साष्टांग करके कहा—"स्वामी! आप हमारे घर कुछ दिन ठहरकर हमें कृतार्थ कीजिये।" मुनि ने उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

रईस ने अपने मकान के आँगन में एक कुटी बनवाई। उसमें पूजा, योगाभ्यास, तपस्या, आदि, के लिए हर सुविधा का प्रबन्ध किया गया। मुनि को उसी कुटी में ठहराया गया। मुनि के दिन वहाँ बड़े आराम से गुज़रने लगे।

उन दिनों उस इलाके में चोरों का भय बढ़ने लगा। रईस के पास हज़ार मोहरें थीं। उन्हें उसने कुटी में छुपाना चाहा; क्योंकि अगर चोर आये भी तो वे कुटी में मुनि के पास न जायेंगे। उनको इसका शक भी न होगा कि कुटी में मोहरें छुपाई जा सकती हैं।

रईस एक दिन, रात को थैली में मोहरें डालकर कुटी में गया। एक कोने में गढ़ा खोदकर उसने मोहरों की थैली दबा दी। फिर उसने मुनि के पास जाकर कहा—"स्वामी! माफ़ कीजिये। आजकल चोरों का बड़ा डर है। इसलिये मुझे अपना धन यहाँ रखना पड़ा है।"

"सब माया है। भ्रम है।"—मुनि ने हँसते हुए कहा। रईस मुनि को साष्टांग प्रणाम कर अपने घर चला गया।

एक महीना बीत गया। एक दिन रात में उस चोर मुनि ने दबी हुई मोहरों की थैली निकाली और मकान के आँगन से बाहर, एक जगह गढ़ा खोदकर उसे दाब दिया।

श्री हरिकृष्ण प्रसाद

अगले दिन वह रईस के घर गया। तब रईस अपने किसी मित्र के साथ बातचीत कर रहा था। मुनि को देखते ही उसने झुककर प्रणाम किया और पूछा—"स्वामी, कहिये, क्या आज्ञा है?"

"बेटा! हम जा रहे हैं। हमारा काम ही लोक-संचरण है। एक जगह भला कितने दिन ठहरेंगे! हमें तुम्हारे आतिथ्य सेवा पर बहुत सन्तोष है। मगर हमें अब जाना होगा।"—चोर मुनि ने कहा।

परन्तु रईस ने उसे और कुछ दिन ठहरने के लिए कहा। मगर मुनि न माना। "बेटा! जाने की आज्ञा हुई है। जाना ही होगा। और हां, यह तिनका जाने कहां से मेरी झोली में आ गया है। यह तुम्हारा है। तुम ही रखो।"—कहते हुए मुनि झोले में से एक तिनका निकालकर सावधानी से उसे राजा के हाथ में रख चला गया।

"कौन है यह चोर बैरागी?"—रईस के मित्र ने पूछा।

"अरे भाई! क्यों ऐसा कहते हो? वह किसी दूसरे का तिनका तक नहीं चाहता। और क्या यह देखते नहीं हो! मालूम है, मैंने उसकी कुटी में हज़ार मोहरों की थैली छुपा रखी है!"—रईस ने कहा।

"मुझे ऐसा लगता है कि वह थैली अब वहां नहीं है। अच्छा है, तुरन्त जाकर वहां देख लो।"—मित्र ने सलाह दी।

रईस ने कुटी में वह गढ़ा खोदा, वहां थैली न थी। दोनों ने घोड़ों पर सवार होकर "मुनि" का पीछा किया। थोड़ी दूर पर उन्हें वह चोर मुनि मिल भी गया। उसके झोले में मोहरों की थैली थी। जब उनकी खूब मरम्मत की गई तो मुनि अपनी चोरी मान गया। बाद में रईस ने उसको न्यायाधिकारी के सामने पेश किया।

[१२]

[नरवाहन के सैनिकों और जंगलियों में युद्ध हुआ। जंगलियों की हार हुई। नरवाहन के सैनिकों ने किले के खण्डहर पर कब्जा कर लिया। शिवदत्त अपने सैनिकों को लेकर समुद्र में भाग निकला। उसे रास्ते में मन्दरदेव मिला। थोड़ी देर बाद, कुछ दूरी पर रोशनी दिखाई दी। वे नौकाओं को उस तरफ़ खेने लगे। उसके बाद—]

घना अंधकार था। हाथ को हाथ न दीखता था। शिवदत्त और मन्दरदेव की नौकायें धीमे धीमे एक साथ जिस तरफ़ से रोशनी आ रही थी, उस तरफ़ आने लगीं। दो तीन दिन से शिवदत्त और उसके अनुचर समुद्र में घूम रहे थे। न वे सोये थे, न उन्होंने भोजन ही किया था। थके-माँदे थे। शिवदत्त के सैनिक चप्पुओं से चुपचाप नाव खेने लगे।

"शिवदत्त! मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। हमारे सैनिकों की भी शायद यही हालत है। जहाँ से रोशनी आ रही है, वहाँ कोई द्वीप होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। पर देखना यह है कि वहाँ आदमी रह सकते हैं कि नहीं!"—मन्दरदेव ने मन्दस्वर में पूछा।

शिवदत्त ने हँसते हुए कहा—"मैं भी यही सोच रहा हूँ। पर मैं यह नहीं सोचता कि इस द्वीप में जैसे तैसे पेट भरकर जीना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है। आप पदच्युत मराल द्वीप के महाराजा हैं। मैं

महासेनानी समरसेन का अनुयायी हूँ; हम दोनों एक ही क्रूर व्यक्ति के बदौलत इस घने अन्धकार में, निर्जन प्रदेश में इस तरह मारे मारे फिर रहे हैं, दर दर भटक रहे हैं। कई मुसीबतें झेल रहे हैं।"

मन्दरदेव ने यह सुन कुछ न कहा। उसके मन में यकायक मराल द्वीप, वहाँ की प्रजा, राज्य की घटनायें, आदि, बिजली की तरह कौंध उठीं। वह सहसा सहम उठा। वह काँपने लगा।

"शिवदत्त! आप क्या कहना चाह रहे हैं, मैं समझ गया हूँ। मैं भयंकर से भयंकर द्वीप में पैर रखते नहीं घबराता हूँ। जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं, तब तक मैं नरवाहन को न भूलूँगा। मैं बदला लेकर ही रहूँगा। मैं अपने राज्य को वापिस लेने के लिये भरसक प्रयत्न करूँगा। आप इस बारे में बेफ़िक्र रहें।"—मन्दरदेव ने कहा।

मन्दरदेव की बातें सुन शिवदत्त बहुत सन्तुष्ट हुआ। शिवदत्त जान गया कि नरवाहन के अत्याचार को वह भूला नहीं था। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि नाव खेनेवाले सैनिक सहसा ज़ोर से चिल्ला उठे—

"यहाँ बहुत पत्थर हैं। लगता है, हम किसी द्वीप के पास पहुँच गये हैं। इस अन्धेरे में, पत्थरों से बचते हुए नाव खेना बहुत मुश्किल है।"

शिवदत्त ने नौकाओं को रोकने की आज्ञा दी। ध्यान से देखने पर, उनको समुद्र में द्वीप के पेड़ों का झुरमुट साफ़ साफ़ नज़र आने लगा। इसमें सन्देह न था कि वे किसी द्वीप के समीप पहुँच गये थे। पर किनारे पर पहुँचने के लिये कोई रास्ता न दीख पड़ता था। कितने ही

पहाड़ वहाँ समुद्र की सतह पर मुँह ऊँचा किये ताकते-से लगते थे। अगर कहीं लहरों के ज़ोर से कोई नौका उनसे टकरा गई तो बिना चूर चूर हुए नहीं रह सकती थी। यह सचमुच ख़तरनाक जगह थी।

शिवदत्त ने कहा—"मन्दरदेव! हमारी समुद्र-यात्रा ख़तम हो गई है। आपको शायद सामने हवा में झूमनेवाले वृक्ष दिखाई दे रहे हैं। इस अन्धकार में चट्टानों के बीच से नौकाओं को किनारे पर ले जाना आसान काम नहीं है। जान का ख़तरा है।"

"तो क्या इसका मतलब है कि सवेरे तक यहीं इन्तज़ार की जावे?"—मन्दरदेव ने आश्चर्य से पूछा।

शिवदत्त ने सिर झुकाकर कहा—"शायद यह ठीक नहीं है। अगर इस द्वीप में कोई बर्बर जाति रह रही हो, तो वे दिन के प्रकाश में हमारा शिकार किये बग़ैर नहीं रहेंगे। इसलिए अन्धेरे में ही हमारा वहाँ पहुँचना अच्छा है। द्वीप क्या है और कैसा है, यह सब भी हम इस बीच जान सकेंगे। अगर किसी ने हमारा मुक़ाबला भी किया तो हम आसानी से भाग भी सकते हैं। यह दिन के प्रकाश में कदाचित सम्भव नहीं।"

मन्दरदेव का भी यही ख़्याल था। दोनों नौकाएँ एक चट्टान के साथ बाँध दी गयीं। किनारे पर पहुँचने के लिये दो तीन फ़र्लांग तैरना ज़रूरी था। क्योंकि किनारा ऊँचा था, इसलिये आसानी से वहाँ पहुँचना असम्भव था। बड़ी बड़ी लहरें भी दूर दूर तक थपथपा रही थीं।

थोड़ी देर तक सलाह-मशवरा करने के बाद, कमर बाँधकर सब समुद्र में कूद पड़े। ऊँची ऊँची लहरें उनको चट्टानों की ओर

धकेलने लगीं। मुश्किल से उनसे बचते बचते जैसे-तैसे वे किनारे पर पहुँचे। उन्होंने गीले कपड़े किनारे पर उतार दिये और अच्छे कपड़े, जिन्हें वे पोटली बाँधकर लाये थे, पहिन लिए। तब भी सब सरदी के कारण काँप रहे थे। ज़ोर से ठंडी हवा चल रही थी।

"इस सरदी से बचने के लिये कहीं आग सुलगानी पड़ेगी, ताकि हाथ सेंके जा सकें। इधर-उधर से कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करूँ क्या?" एक सैनिक ने शिवदत्त से डरते हुए पूछा।

"अच्छा! इकट्ठी करो। कहीं इस द्वीप में नर-भक्षक रहते हों, तो हमारी आग में हमें ही वे भूनकर खा सकते हैं।" शिवदत्त ने हँसते हँसते कहा।

"हमारे हाथ में तेज़ चाकू और भाले हैं...." मन्दरदेव कुछ कहना चाहते थे कि शिवदत्त ने बीच में आते हुए कहा: "आपको इन द्वीपों और उनमें रहनेवालों के बारे में अधिक नहीं मालूम है। जंगली लोग बड़े निडर होते हैं। भय किस चीज़ का नाम है, वे जानते ही नहीं हैं। आप तलवार से एक का

खातमा कर रहे होंगे कि छः पीछे से आप पर टूट पड़ेंगे। उनका मुकाबला करना बहुत मुश्किल है।"

इतने में कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कर सैनिकों ने आग सुलगा ली, और उसके चारों ओर बैठकर वे हाथ सेंकने लगे। शिवदत्त उस द्वीप और आनेवाली घटनाओं के बारे में सोचने लगा। मगर मन्दरदेव बेफ़िक्र थे। वे सोच रहे थे कि सूर्योदय होने पर द्वीप के बारे में देखा जायेगा। उससे पहिले क्यों फ़िजूल माथापच्ची की जाय।

एकाएक एक कुत्ता भौंका और झट रुक गया। शिवदत्त और उसके साथी चौंक उठे और उस तरफ़ देखने लगे, जिस तरफ़ से आवाज़ आई थी। मन्दरदेव ने थोड़ी देर बाद, शिवदत्त से यों हिचकिचाते हुए कहा—

"शिवदत्त! लगता है, यह बर्बर जातियों का द्वीप नहीं है। शायद हमारा भय ठीक न था। क्योंकि कुत्तों का पालना सिर्फ़ सभ्य लोग ही जानते हैं।"

"मन्दरदेव! आप ग़लती कर रहे हैं।" शिवदत्त ने हँसते हुए कहा—"मैंने

स्वयं अपनी आँखों से जंगलियों को चीते, शेर पालते देखा है। शायद मैंने आपको इसके बारे में बताया भी था। जिस कुत्ते की हमने आवाज़ सुनी है, हो सकता है वह जंगली कुत्ता हो। पर निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। सवेरा होने पर इस बारे में...."

शिवदत्त अपनी बात पूरी न कर पाया था कि पेड़ों के झुरमुट में से एक पत्थर बाण की तरह आग सेंकते हुए सैनिक को लगा। पत्थर लगते ही सैनिक मरता-जीता चारों खाने चित गिर पड़ा। सब चौंक पड़े। मंदरदेव ने तुरत धनुष पर बाण लगाकर जिस दिशा से पत्थर आया था, उस तरफ छोड़ दिया।

फिर एक ऐसी भयंकर मनुष्य की-सी आवाज़ सुनाई पड़ी कि शिवदत्त भी भय से सिहर उठा। सब एक दूसरे का मुख ताकने लगे। यह द्वीप कतई निर्जन न था। कोई क्रूर जाति ज़रूर वहाँ रह रही थी। यह मनुष्य की-सी आवाज़ इस बात की साक्षी देता-सा लगता था।

मन्दरदेव तलवार निकालकर आगे बढ़ने लगे। उन्होंने सैनिकों को पीछे आने के लिए कहा। पर इतने में शिवदत्त ने उनको मना करते हुए कहा—"मन्दरदेव! आप खतरे में जानबूझकर उलझ रहे हैं। इस अन्धेरे में हम शत्रुओं का पीछा नहीं कर सकते। हम इस द्वीप में नये हैं। हम यह नहीं जानते कि किस पेड़ के पीछे क्या खतरा छुपा हुआ है।"

"भले ही वह पत्थर फेंकनेवाला कोई हो, मैंने उसको अपने बाण से घायल कर दिया है। बाण लगते ही वह बुरी तरह चिल्लाया था न! अगर वह अब भी ज़िन्दा है, तो हम उससे इस द्वीप के

बारे में जान सकते हैं।"—मन्दरदेव ने शिवदत्त से कहा।

पर शिवदत्त ने मन्दरदेव की बात न मानी। "मौजूदा हालत में हम यह नहीं जानते कि आपके बाण की चोट से वह मरा है या चोट खाकर भाग गया है। हम यह भी नहीं जानते कि वह अकेला है या उसके साथ और भी कई हैं। इसलिये सूर्योदय से पहिले हमारे लिये यह ही अच्छा है कि हम बहुत होशियारी से रहें। हमारा यहाँ से हिलना अच्छा नहीं है।"—उसने कहा।

इस विषय में सब शिवदत्त से सहमत थे। सोनेवाले सो गये। शिवदत्त और एक सैनिक पहरा देने लगे। सूर्योदय होने तक कोई भी उल्लेखनीय घटना उस इलाके में न घटी। सब वातावरण शान्त था।

काफ़ी सवेरा होने के बाद, मन्दरदेव और सैनिकों ने आँखें खोलीं। आँखें खोल कर देखते क्या हैं कि वे एक घने जंगल में हैं। आकाश को चूमनेवाले बड़े बड़े वृक्ष और उनकी जड़ के पास उगे हुए छोटे छोटे पेड़, पौधे, घनी बेलें इधर उधर फैली हुई थीं। और उन पर बन्दर उछल-कूद रहे थे। तरह तरह के पक्षी चह चहा रहे थे। उस भयानक दृश्य को देखकर भय लगता था।

"मन्दरदेव! अब हम वह काम पूरा कर सकते हैं, जो हमने रात को अधूरा छोड़ दिया था। शायद आप बता सकते हैं कि आप का बाण कितनी दूर जाकर, उस भयंकर आवाज़वाले मनुष्य को लगा था?"—शिवदत्त ने पूछा।

मन्दरदेव आगे आगे चले। पेड़-पौधों, घास-पत्तों को चीरते हुए वे बढ़ रहे थे। कोई निश्चित रास्ता न था। वे सब सौ गज़ गये होंगे कि उन्हें पत्तों पर खून के चिन्ह दिखाई दिये। (अभी और है)

अजीब हँसी

त्रिविक्रमार्क अपनी ज़िद का पक्का था। वह फिर पेड़ के पास गया। शव को उतार कर कन्धे पर डाल, वह चुपचाप श्मशान की ओर चला। तब शव में स्थित बेताल ने अट्टहास करके कहा—"अरे भाई! राजा लोग अपने को आफ़त से बचाने के लिए दूसरों को बलि देते हैं। दूसरों को आफ़त से बचाने के लिए कोई अपनी बलि नहीं देता। क्या तुमने चन्द्रावलोक की बात नहीं सुनी है? सुनो, मैं सुनाता हूँ।" उसने यह कहानी सुनानी शुरु की:

"पहिले किसी ज़माने में, चन्द्रावलोक चित्रकूट का राजा था। उसकी प्रजा को उस पर अभिमान था। वह भी प्रजा को मित्र की तरह देखता। सुख से वह अपना समय गुज़ार रहा था। पर उसमें एक ही

बेताल कथाएँ

कमी थी। उसे विवाह के लिए कोई भी उपयुक्त कन्या न मिली। इसलिये वह अविवाहित ही रह गया था। जब कभी उसे अफ़सोस होता कि उसके पत्नी नहीं है, झट वह शिकार खेलने चला जाता और बहुत समय तक वहीं रहता। शिकार में अपनी चिन्ता भूल जाता।

एक बार राजा शिकार खेलने गया। रास्ते में जो कोई क्रूर जन्तु मिलता, उसे वह मार देता। शिकार खेलता खेलता वह एक घने जंगल में घोड़े पर सवार हो पहुँचा। जाते जाते उसको एक पेड़ों का झुरमुट दिखाई दिया। उसके पास एक सोता था। प्यास बुझाकर एक पेड़ के नीचे, वह आराम करने लगा।

इस बीच में जंगल में से एक सुन्दर मुनि-कन्या वहाँ स्नान करने के लिए आई। उसको देखते ही राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि वह उसके उपयुक्त पत्नी बन सकती थी। परन्तु वह कन्या राजा को देख कर शर्मा गई और वापिस चली गई।

राजा उसका पीछा करता करता एक आश्रम में पहुँचा। वह एक मुनि का आश्रम था। वह कन्या उसकी दत्तक पुत्री थी उसका नाम इन्दीवर प्रभा था। राजा ने मुनि के दर्शन करके बताया कि वह शिकार के लिए आया हुआ था। यह सुन मुनि ने कहा—"बेटा! क्यों अपनी शक्ति शिकार में व्यर्थ गँवाते हो! राज्य का परिपालन करो; अच्छे कामों में प्रवृत्त होओ।"

तब चन्द्रावलोक ने कहा"—ऋषिजी! मैं अभी तक गृहस्थ नहीं बन पाया हूँ। मुझे मेरे अनुरूप कोई कन्या नहीं मिली है। आपके आश्रम में मैंने अभी ही इन्दीवर प्रभा को देखा है। यदि आपने कृपा करके

उसका मेरे साथ विवाह किया तो मैं यह शिकार छोड़ दूँगा और राज्य-पालन में ही अपना समय बिता दूँगा।"

मुनि ने इन्दीवर प्रभा की अनुमति लेकर उन दोनों का अपने हाथ से ही विवाह करवाया। विवाह होते ही राजा, पत्नी को लेकर राजधानी की ओर चल पड़ा। उनके थोड़ी दूर जाते ही अन्धेरा हो गया। रात को उन्हें आराम करने के लिए, पीपल का पेड़ मिला। पेड़ के नीचे कालीन की तरह हरी मुलायम घास बिछी हुई थी। पास में एक झील थी, उसमें कमल थे। उस झील का पानी पीकर वे सो गये।

सवेरे उनको ज़ोर का शोर सुनाई पड़ा। वे घबराकर उठ खड़े हुए। उनके सामने एक भ्रम राक्षस खड़ा चिल्ला रहा था—"जानते हो, मैं कौन हूँ! मेरा नाम ज्वालामुख है। मुझे देखकर देव-देवता भी डरते हैं। यह मेरा पीपल का पेड़ है। मेरी गैरहाजिरी में, बिना मेरी इजाजत के तुम इस पेड़ के नीचे क्यों सोये! देखो, मैं तुम्हारा क्या करता हूँ!"

"महाराज! बिना जाने अपराध हुआ है। मुझे क्षमा करो। अगर इस गल्ती के

लिए कोई प्रायश्चित हो तो मैं करने के लिए तैयार हूँ।"—ज्वालमुख से चन्द्रापलोक ने बड़े विनय से कहा।

"अच्छा तो सात दिन में, सात वर्ष के एक लड़के की मुझे बलि दो। इस बलि के लिए लड़के को स्वयं मानना पड़ेगा। उसका सिर तुम्हें अपने हाथों से काटना होगा। उस समय, उसके माँ-बाप को ही, उसके हाथ पैरों को ज़ोर से पकड़ना होगा। कुछ भी अगर इस में भूल-चूक हुई तो मैं नहीं मानूँगा।"—ज्वालामुख ने कहा। और कोई रास्ता न था। राजा ने

राक्षस की बात मान ली। पत्नी के साथ घोड़े पर चढ़ वह चल पड़ा। नौकर-चाकरों के साथ बाद में, वह चित्रकूट पहुँचा।

राजा ने विवाह कर लिया है, यह सुन मन्त्री खुश तो हुए, पर ज्योंही उन्होंने ज्वालामुख के बारे में सुना, त्योंही वे चिन्ता-सागर में डूब गये। तब महामन्त्री सुमति ने कहा—"महाराजा! आप फ़िक्र न कीजिये। बलि के लिए जैसे तैसे मैं एक उपयुक्त बच्चे को ढूँढ निकालूँगा।"

उसने तुरत सुनारों को बुलवाकर आज्ञा दी कि वे सात वर्ष के लड़के की सोने की मूर्ति तैयार करें। एक मूर्ति तैयार कर दी गई। उसे एक गाड़ी में रखकर मन्त्री ने कुछ सैनिकों से यों कहा:

"तुम इस मूर्ति को गाँव गाँव फिराओ। यह ढिंढोरा पीटो कि सात वर्ष का एक लड़का इच्छापूर्वक ब्रह्मराक्षस की बलि के लिए चाहिये। उसको बलि देते समय उसके माँ-बाप को उसके हाथ-पैर पकड़ने होंगे। जो कोई यह मानेगा, उसको यह सोने की मूर्ति दी जायेगी।"

राज-सैनिक यह घोषणा करते हुए, उस मूर्ति को गाँव गाँव ले जाने लगे। एक
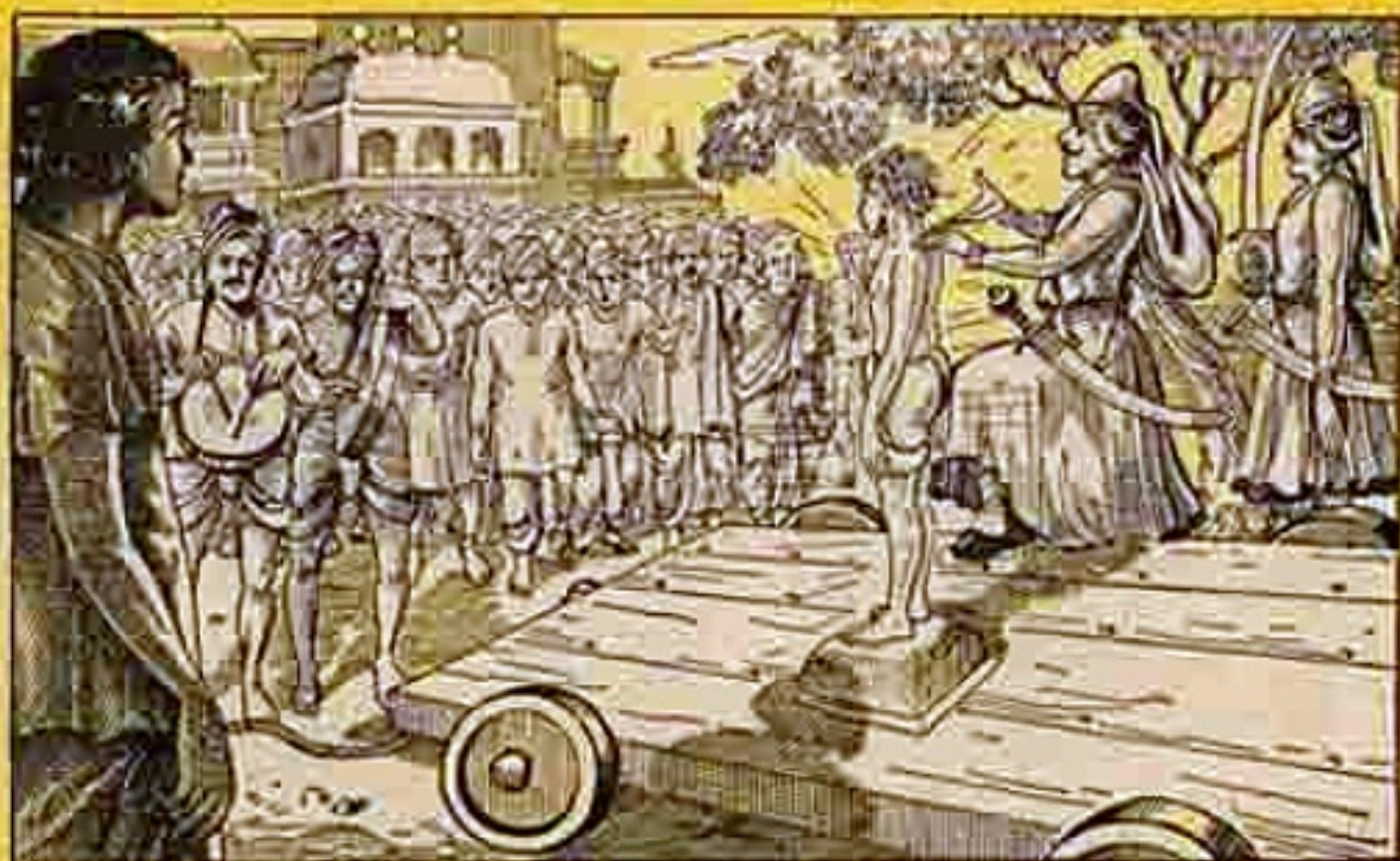
ब्राह्मणों के गाँव में सात वर्ष के एक ब्राह्मण लड़के ने ढिंढोरा सुनकर राज सैनिकों से कहा—"मैं ब्रह्मराक्षस के लिए बलि होने को तैयार हूँ। मैं अपने माँ-बाप को भी मना लूँगा। आप हमारे साथ मेरे घर चलिये।"

उसने अपने माँ-बाप से कहा कि वे उसको बलि होने के लिए अनुमति दें। इसके लिए वे बिल्कुल न माने। तब लड़के ने कहा—"हम बड़ी गरीबी में जी रहे हैं। आप मेरे कारण क्या आनन्द पा रहे हैं? आज नहीं तो कल मुझे जाना ही होगा। पहिले गरीबी तो दूर कर लो। बाद में और सन्तान होगी। उनको देखकर खुश होना। फिर इस तरह का मौका न मिलेगा।" बहुत-कहने सुनने पर, उसके माँ-बाप भी मान गये। राज-सैनिकों ने सोने की मूर्ति को, उसके माँ-बाप को दे दिया। उसको और उसके माँ-बाप को गाड़ी में बिठाकर वे राजा के पास ले गये।

राजा उस लड़के को, उसके माँ-बाप को साथ लेकर, ज्वालामुख के पीपल के पेड़ के पास गया। उसने उसको पुकारा। ब्रह्मराक्षस उसकी आवाज़ सुनकर आया।

"महाराज! आपकी निश्चित की हुई अवधि में आप के लिए बलि ले आया हूँ।" —राजा ने कहा।

"तो उसका गला काटो।"—ब्रह्मराक्षस ने कहा।

लड़के के माँ-बाप ने उसके हाथ-पैर ज़ोर से पकड़ लिये। उसका गला काटने के लिए राजा ने तलवार उठाई। उस समय वह लड़का हँसा। तुरत ब्रह्मराक्षस ने उसे उठाकर चूमा और कहा—"जाओ, बेटा! घर जाओ।"

बेताल ने कहानी सुनाकर कहा—"राजा! मरते समय वह लड़का क्यों हँसा था? ब्रह्मराक्षस ने उस लड़के की बलि क्यों नहीं स्वीकार की? क्यों उसने उसे छोड़ दिया? अगर जानबूझ कर तुमने जवाब न दिया, तो तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा।"

"जब छोटे बच्चों को डर लगता है तो माँ-बाप उन्हें बचाते हैं। हर हालत में मनुष्यों का राजा रक्षक है। जब राजा न रक्षा कर पाये तो कोई अमानुषीय शक्ति ही रक्षा कर सकती है। वह लड़का आपत्ति में था। उस आपत्ति में उसके माँ-बाप तो रक्षा नहीं करते, वह तो उसके हाथ-पैर पकड़े हुए थे। राजा भी मदद न करता। क्योंकि वह स्वयं बलि दे रहा था। पास खड़े ब्रह्मराक्षस में एक अमानुषीय शक्ति थी। पर वह बचायेगा नहीं, क्योंकि उसे ही बलि चढ़ाई जा रही थी। तीनों रक्षकों में से उसे एक रक्षक की भी रक्षा न मिल रही थी। इसलिये वह लड़का हँस पड़ा। उसकी हँसी का मतलब समझकर ब्रह्मराक्षस ने उसके प्राणों की रक्षा की।"—विक्रमार्क ने कहा।

इस प्रकार राजा का मौन-भंग होते ही, बेताल शव को लेकर फिर पेड़ पर जा बैठा।

चोर - डाकू

फ़ारस के निशापुर नामक नगर में शम्स नाम का एक नौजवान रहा करता था। उसने परदेश जाकर धन कमाने की सोची। वह एक काफ़िले के साथ चल पड़ा। काफ़िला एक रेगिस्तान में पहुँचा।

शम्स कभी किसी काफ़िले में न गया था। इसलिए, वह पड़ाव में खा-पीकर ऊँघने लगा। वह उठा तो सवेरा हो चुका था और काफ़िला बहुत दूर जा चुका था।

शम्स अकेला रह गया था। उसे कुछ न सूझा कि क्या करे। वह दिन भर बिना कुछ खाये-पिये इधर उधर भटकता रहा। उसे एक भी आदमी न दिखाई दिया। अगले दिन, उसे दूर पर ऐसा लगा, जैसे उसकी तरफ़ कोई चला आ रहा हो।

दुर्भाग्य से, वह आनेवाला रेगिस्तान में रहनेवाले डाकुओं में से एक मशहूर डाकू था। वह बड़ा साहसी और क्रूर था। वह शम्स पर झपटा। उसके हाथ-पैर बाँधकर, उसको रेत में घसीटता घसीटता स्वयं घोड़े पर सवार होकर वह चलता गया। एक तालाब आया। डाकू घोड़े पर से उतरा। तलवार एक तरफ़ रखकर पानी पीने लगा। शम्स ने तो अपनी जान पर भरोसा पहिले ही छोड़ रखा था। इसलिये उसने बँधे हाथों से उसकी तलवार ली और उसी के कोख में भोंक दी। डाकू वहीं ठंडा हो गया।

शम्स ने उसी तलवार से अपने बन्धन भी काट लिये। मरे हुए डाकू के घोड़े पर सवार होकर वह चल दिया। उसे डर लग रहा था कि जाने क्या क्या मुसीबतें उसे झेलनी पड़ेंगी। उसे रेगिस्तान में रास्ता न मालूम था। इसलिए उसने घोड़े की लगाम छोड़ दी और घोड़ा अपने रास्ते पर चलता

श्री मदनमोहन श्रीवास्तव

गया। घोड़ा चलता चलता कई तम्बुओं के पास पहुँचा। तम्बु डाकुओं के थे। उन्हीं डाकुओं के सरदार को शम्स ने मार दिया था। जब डाकुओं ने, दूर से सरदार के घोड़े को आते हुए देखा तो सोचा कि सरदार आ रहा है। पर जब उनको पता लगा कि उनका अनुमान ग़लत था तो सब ने शम्स को घेरकर पूछा—"कहो क्या हुआ? सरदार कहाँ हैं? उनके घोड़े पर क्यों आये हो? तुम कौन हो?"

शम्स अक़्लमन्द था। उसने समझदारी से काम लिया। उसने एक चाल चली।

"भाइयो! मैं एक राहगीर हूँ। जब हमारा काफ़िला रेगिस्तान में से गुज़र रहा था, तो आपके बलवान सरदार ने हम पर अकेला हमला किया और हम में से कई को मार भी दिया। परन्तु अन्त में सैकड़ों आदमियों ने घेरकर उसे पकड़ लिया। हम में से कई ने कहा भी कि उसको छोड़ दो, क्योंकि हम उसकी बहादुरी से बहुत प्रभावित हुए थे। काफ़िले का सरदार हमारी बात सुनकर कुछ झुका भी। परन्तु जो मारे गये थे, उनके रिश्तेदारों ने ज़िद पकड़ी कि उससे ज़रूर बदला लेना चाहिए।
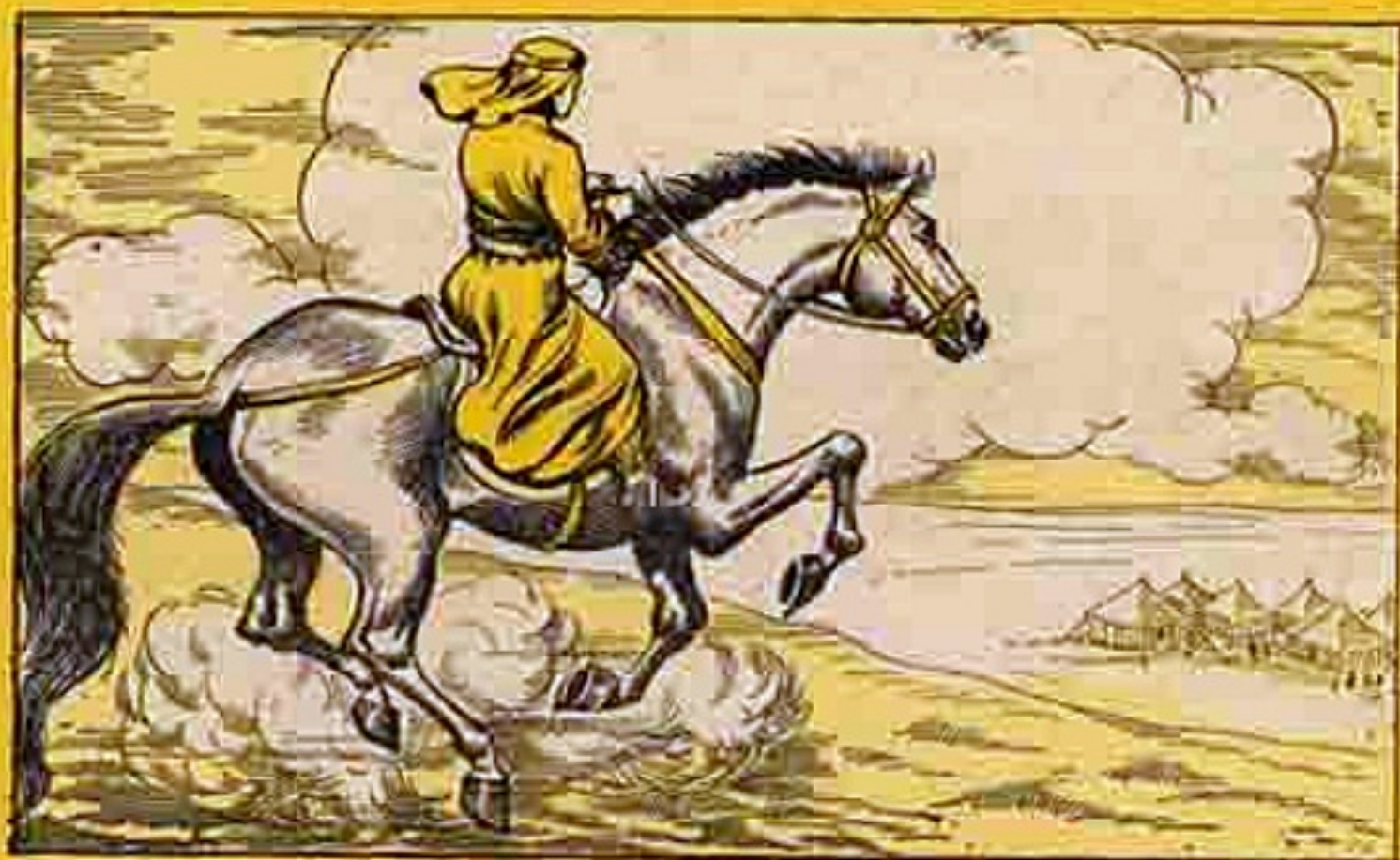
तब हम ने कहा—"अगर तुम बदला लेना चाहते हो, तो कत्ल के बदले रुपया-पैसा वसूल कर लो। परन्तु यह अच्छा नहीं कि इतने बहादुर आदमी को मारा जाये।" यह वे मान गये। उन्होंने कहा कि बशर्ते दस हज़ार दीनारें उनको दी गयीं तो वे उसको छोड़ देंगे। तुम्हारे सरदार ने कहा कि वह दस हज़ार दीनारें लाकर दे देगा। पर कोई भी यह न माना कि वह अकेला वापिस जाये। जब औरों को जाने के लिए कहा गया तो वे हिचकिचाने लगे। किसी ने कहा—"थके हुए हैं"। किसी और ने कहा—"रास्ता नहीं मालूम है।" तब तुम्हारे सरदार ने कहा—"चाहते हो तो तुम में से एक मेरे घोड़े पर सवार होकर जा सकता है। यह सीधा हमारे पड़ाव की ओर ही जायेगा।" तब मैं तैयार हुआ और ठीक उसी तरह यह घोड़ा मुझे यहाँ ले भी आया।"—शम्स ने कहा।

डाकू यह न निश्चय कर सके कि इस कहानी पर विश्वास किया जाय कि नहीं। यह देख शम्स ने कहा—"यह ज़रूरी नहीं है कि मेरी बात पर आप विश्वास

करें। अगर आप दीनारें नहीं देना चाहते हैं तो मैं चला जाऊँगा। पर आप अपने सरदार को, उस हालत में मरा जानिये। अगर आप मेरी बात मानते हैं, तो दस हज़ार दीनारों के देने की भी ज़रूरत नहीं। आपमें से दस हट्टे कट्टे आदमी मेरे साथ आइये। मैं आपके सरदार को दिखाऊँगा।"

यह सुन डाकुओं का सन्देह जाता रहा। उनमें से दस आदमी, अपने घोड़े पर चढ़, दस हज़ार दीनारें लेकर, शम्स के साथ चल दिये। धूल और हवा के रुख से, वे दूरी पर जाते हुए, काफ़िले को जान लेते थे। वे काफ़िलों के रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ़ थे। इसलिए थोड़ी देर में ही वे काफ़िले से जा मिले।

काफ़िले के पास पहुँचने से पहले शम्स ने डाकुओं से कहा—"तुम ज़रा धीमे धीमे आओ। मैं पहिले काफ़िले के सरदार से जाकर कहता हूँ कि तुम दीनारें ला रहे हो, इसलिए तुम्हें पकड़ने की ज़रूरत नहीं है।" डाकू उसकी सलाह मान गए।

काफ़िले के सरदार से मिलकर शम्स ने सारी बात सच्ची सच्ची सुना दी। वह शम्स की अक़्लमन्दी देखकर खुश हुआ। उसने डाकुओं को पास आने दिया।

डाकू दीनारों के साथ पकड़े गए। काफ़िले के सरदार ने उनको तल्वार से कटवाने के लिए कहा और उसने यह भी फ़ैसला किया कि वे दस हज़ार दीनारें शम्स को मिलनी चाहिए। परन्तु शम्स ने कहा कि डाकुओं को नहीं मारें, क्यों कि बिना सरदार के वे उतने ख़तरनाक न थे। तब काफ़िले के सरदार ने डाकुओं से यह क़सम खिलवाई कि वे आगे से डाके न डालेंगे और फिर उनको छोड़ दिया।

बताओगे ?

१. संसार का सबसे बड़ा देश कौन-सा है? यह कहाँ है?
२. भारत में चान्दी कहाँ मिलती है?
३. पद्म विभूषण क्या है?
४. क्या बुद्ध जयन्ती भारत के अलावा अन्य देशों में भी मनायी गयी?
५. एक ऐसी हिमालय की चोटी का नाम बताओ, जिस पर हाल में, प्रथम बार मनुष्य पहुँच सका? पर्वतारोही किस देश के थे?
६. रूस में क्या सिक्का चलता है?
७. तेनाली रामन किसके दरबार में कवि था?
८. विवेकानन्द के गुरु का नाम क्या था?
९. सब से अधिक भारतीय प्रवासी किस देश में हैं?
१०. क्यूनीन किस चीज़ से बनायी जाती है?

पिछले महीने के 'बताओगे?' के प्रश्नों के उत्तर:

१. भन्डार नायके।
२. नेपाल
३. हाँ, हैं....प्रधान पुस्तकें—'मेरी कहानी,' 'विश्व के इतिहास की झाँकी', 'हिन्दुस्तान की कहानी।'
४. वाल्मीकी, कम्बर।
५. नहीं है।
६. नलय भट्ट।
७. व्रज भाषा
८. गलत, वे रूस के रहनेवाले थे।
९. बंगाल की खाड़ी में। वे भारत का एक भाग है।
१०. चीन में। यह पोर्चुगाल के अधीन है।

बातूनी योद्धा

किसी जमाने में फिलोमिनस नाम का राजा रोम देश का राज्य किया करता था। उसके एक सुन्दर लड़की थी। राजमहल का एक योद्धा उससे प्रेम किया करता था। एक बार उस योद्धा को राजकुमारी से एकान्त में बातचीत करने का मौका मिला। तब उसने हिम्मत करके, उसके सामने अपने प्रेम को व्यक्त किया।

राजकुमारी ने कहा—"क्योंकि तुमने अपने मन की बात कही है, इसलिए मैं भी अपने मन की बात तुम्हें बताये देती हूँ। यह सच है कि मैं भी तुम्हें बहुत दिनों से प्रेम कर रही हूँ।"

यह सुन योद्धा बहुत सन्तुष्ट हुआ। उसने राजकुमारी से कहा—"मैं कल परसों परदेश जा रहा हूँ। सात वर्ष बाद वापिस आऊँगा। इस बीच में, भले ही मेरी जान चली जाये, मैं किसी और से विवाह न करूँगा। तुम भी शपथ करो कि सात वर्ष तक मेरी प्रतीक्षा करोगी। अगर मैं सात वर्ष की अवधि के बाद न आया, तो समझना कि मैं मर गया हूँ और किसी और से तुम शादी कर लेना।"

राजकुमारी ने उसके हाथ पर हाथ रख यह शपथ ली। अगले दिन वह योद्धा परदेश के लिए रवाना हो गया। उसी दिन हंगरी देश के राजा ने रोम के राजा के पास खबर भिजवाई—"मैं तुम्हारी लड़की से विवाह करना चाहता हूँ।"

राजा ने अपनी लड़की पूछा—"बेटी! हंगरी देश का राजा तुमसे विवाह करना चाहता है। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"पिताजी! सात साल तक मैं कुँवारी ही रहना चाहती हूँ। अगर उसके

श्री चन्द्रशेखर अग्रवाल

बाद भी मैंने शादी न की तो, तब मैं अपना ख्याल आपको अवश्य बता दूँगी।"—राजकुमारी ने कहा।

राजा ने, अपनी लड़की के इस ख्याल के बारे में हंगरी राजा के पास खबर भिजवा दी। परन्तु हंगरी के राजा ने कहला भेजा—"अच्छा, तो मैं सात वर्ष बाद ही विवाह करने आऊँगा।"

सात वर्ष बीत गये! राजकुमारी, योद्धा की वापसी की राह देख रही थी। अगर वह कल तक न आया तो हंगरी का राजा आकर उससे शादी कर लेगा। उसको उसके साथ शादी करनी ही होगी।

अवधि समाप्त होते ही हंगरी का राजा रोम के लिए निकल पड़ा। उसको रास्ते में एक योद्धा मिला। वह भी रोम नगर का था। वह रोम ही जा रहा था। उसको देखकर हंगरी का राजा बड़ा सन्तुष्ट हुआ।

वे गप्पें लगाते लगाते रास्ता तय करते जाते थे। इतने में मूसलधार वर्षा होने लगी। हंगरी के राजा के कपड़े वर्षा में भीगकर बहुत खराब हो गये।

"महाराज! आपको अपने साथ अपना घर लाना चाहिए था।"—योद्धा ने कहा।

"क्या हमारा घर कोई छोटा-मोटा है जो साथ ले आते! तुम बड़े नादान जान पड़ते हो।"—राजा ने कहा।

थोड़ी दूर जाने के बाद एक नदी रास्ते में पड़ी। राजा ने अपने घोड़े को थप थपाकर पानी में कुदवाया। घोड़े के पैर गड्ढे में जा पड़े। राजा डूबता डूबता बचा। योद्धा गड्ढे से बचकर राजा के पीछे ही किनारे पर पहुँचा। उसने राजा से कहा—"आप साथ एक पुल जो ले आते!"

"तुम तो सचमुच पागल जान पड़ते हो। इस नदी को पार करने के लिए कोई

भला अपने साथ फूल लाता है!"—हंगरी के राजा ने पूछा।

"बाबू! एक का मूर्ख होना दूसरे के लिए फ़ायदेमन्द है।"—योद्धा ने कहा।

थोड़ी दूर जाने के बाद हंगरी के राजा ने योद्धा से पूछा—"अरे भाई! इस समय वक्त क्या होगा?"

"अगर पेट में भूख हो तो भोजन का समय है। क्या आप मेरे भोजन का कुछ हिस्सा लेंगे?"—योद्धा ने पूछा।

"मुझे लेने में कोई एतराज़ नहीं है।"—राजा ने योद्धा से कहा।

दोनों ने खूब खा-पीकर आराम किया। "बाबू! आपको माँ-बाप को साथ लाना चाहिए था।"—योद्धा ने कहा।

"यह तो तुमने खूब कहा। मेरे पिताजी तो कभी के गुज़र चुके हैं। मेरी माँ हमेशा चारपाई पकड़े रहती हैं। उनको कैसे साथ लाऊँ? लगता है तुम तो कतई बेवकूफ़ हो।"—राजा ने कहा।

"सच कब तक छुपेगा! कभी न कभी आपको इसका पता लग ही जायेगा!"—योद्धा ने कहा। वे फिर रोम पहुँचे।

"प्रभु! अब मुझे जाने की इजाज़त दीजिए। आप शायद राज-पथ से जाएँगे। मैं पगडंडी से ही चला जाऊँगा। सात साल पहिले फन्दा डालकर गया था। मुझे देखना है कि वह किस हालत में है!"—योद्धा ने कहा।

"अच्छा तो जाओ।" कहता कहता हंगरी का राजा आगे बढ़ गया। उसका रोम के राजा ने ज़ोरदार स्वागत किया। नहा-धोकर, जब हंगरी का राजा, रोम के राजा के साथ भोजन कर रहा था तो उसने कहा—"मुझे रास्ते में एक योद्धा मिला। बिचारा पगला था। जब बारिश में मेरे कपड़े भीग गये तो वह पूछता है—"साथ घर जो ले आते!" यह कह राजा अट्टहास करने लगा।

"बारिश से उसने अपने को कैसे बचाया!"—रोम के राजा ने पूछा।

"उसने अपने को दुपट्टे से ढांप लिया था।" हंगरी के राजा ने कहा।

"तब क्या है! शायद यह कहने का उसका मतलब था कि आपको भी साथ दुपट्टा लाना चाहिये था। उसकी बात निरर्थक न थी।" रोम के राजा ने कहा।
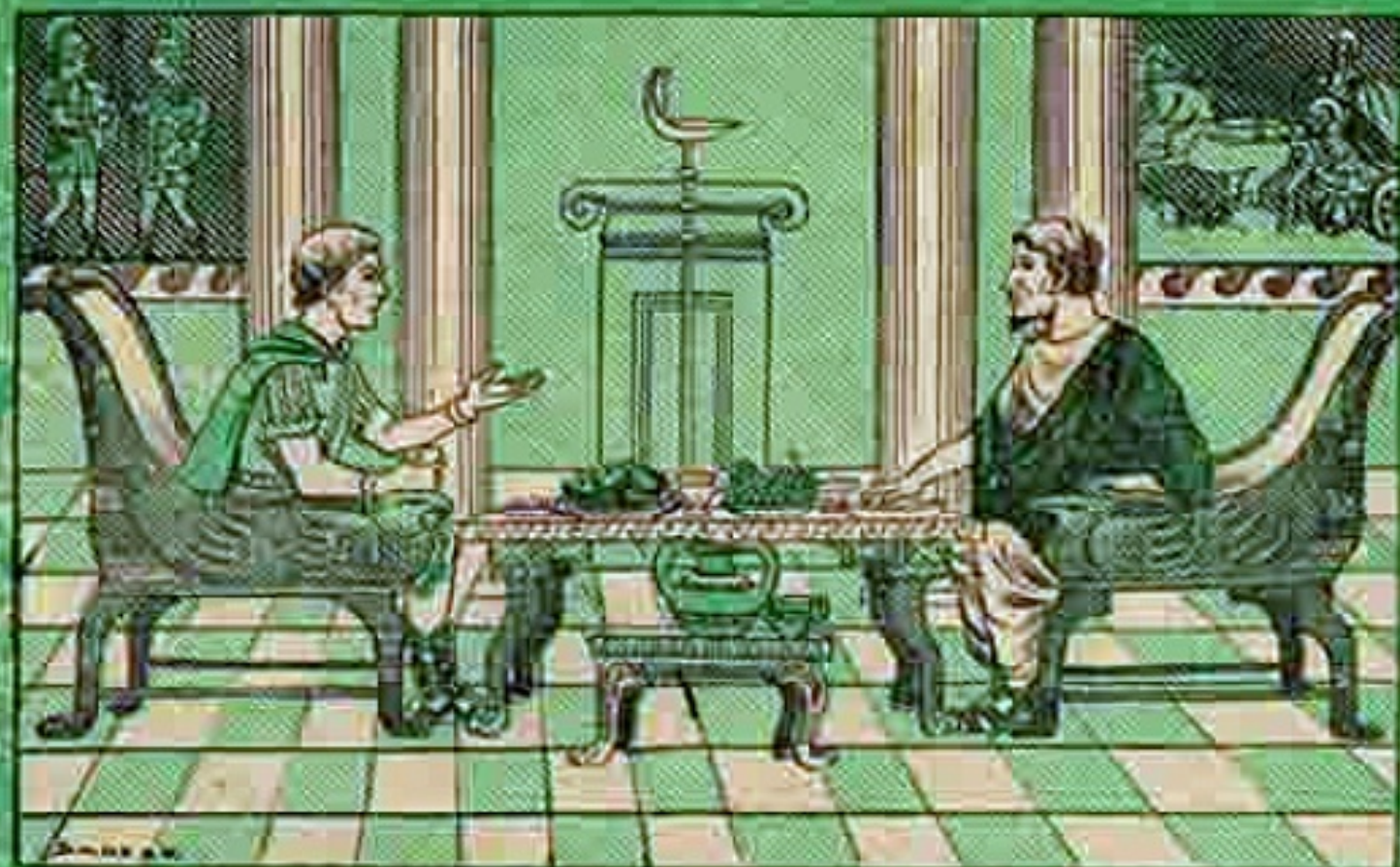
तब हंगरी के राजा ने वह घटना भी सुनाई—रास्ते में कैसे नदी आई, कैसे उसने घोड़े को कुदवाया, और कैसे वह डूबते डूबते बचा, और कैसे योद्धा ने उससे पूछा था कि साथ जो एक पुल ले आते!

"उस योद्धा का मतलब यह था कि आपको साथ नौकर-चाकर लाने चाहिये थे, ताकि वे आगे जाकर नदी की गहराई जान सकते।" रोम के राजा ने कहा।

"उसने मुझे भोजन के लिये निमन्त्रित किया और खाने-पीने के बाद उसने मुझसे कहा—"आपको माँ-बाप साथ लाने चाहिये थे।"

"उसका माँ-बाप से मतलब था, खाने-पीने की चीजें। वह उन्हें स्वयं साथ ले आया था, और आप नहीं लाये थे।"—रोम के राजा ने कहा।

"खैर, उसने जाते वक्त कहा कि सात साल पहिले वह एक फन्दा डाल गया था, और उसको तुरत जाकर उसे देखना है। क्या इसका भी कोई मतलब है?"—हंगरी देश के राजा ने पूछा।

"उसने क्या यह कहा था?" कहता कहता राजा जल्दी जल्दी उठा। 'सात साल' कहते ही, उसको लड़की की माँगी हुई सात वर्ष की अवधि याद हो आई। वह तुरत अन्तःपुर में गया। हंगरी का राजा भी उसके पीछे भागा। वह कुछ भी समझ न सका।

रोम के राजा का भय सच निकला। ढूँढने पर भी राजकुमारी का पता न लगा। उसको योद्धा साथ ले गया था।

"तुम जिससे शादी करने आये थे, उसको वह योद्धा पहिले ही ले गया है। अब भी पता लगा कि नहीं कि तुममें से कौन मूर्ख है?" रोम के राजा ने पूछा

नाविक सिन्दबाद

खलीफा हरून अल रशीद के ज़माने में, सिन्दबाद नाम का एक गरीब बग़दाद में रहा करता था। वह मज़दूरी करके अपना पेट भरा करता था। एक दिन कड़ी दुपहरी में, भारी बोझ ढोता ढोता वह एक धनी के घर के पास पहुँचा। घर के सामने अच्छी तरह झाड़ू लगाकर गुलाब जल छिड़का गया था। इसलिए वहाँ की हवा ठंढी और सुगन्धित थी। राहगीरों के आराम के लिए बाहर एक तख़्त भी रखा हुआ था। सिन्दबाद बोझ नीचे रखकर आराम से तख़्त पर लेट गया। घर के अन्दर से मधुर संगीत, कोयल, बुलबुल का चहचहाना सुनाई पड़ रहा था। सिन्दबाद यह सुन बड़ा खुश हुआ और घर के अन्दर झाँकने लगा। अन्दर एक सुन्दर बगीचा था। उसमें अनेक दास-दासियाँ और अतिथि उसको दिखाई दिये।

सिन्दबाद तक भी तरह तरह के पकवानों और इत्रों की सुगन्ध हवा के सहारे पहुँची। उसने एक लम्बी

प्रस्तावना

साँस लेकर कहा—"ओ अल्लाह! मुझ जैसे तुच्छ को कैसे मालूम कि किस पर तेरी कृपा-दृष्टि पड़ती है! इस घर के मालिक को तूने सब कुछ दिया है—अच्छा खाना, धन-सम्पत्ति, भोग-विलास, आदि, और मुझ गरीब को कुछ भी न दिया।" वह अल्लाह का ध्यान कर तुरन्त अपनी गरीबी पर कविता बनाकर गला फाड़ फाड़कर गाने लगा।

वह थोड़ी देर तक गाता रहा। जब वह अपना बोझ उठाकर जाने को था कि दरवाजे के पास आकर एक गुलाम ने उससे कहा—"मालिक तुम्हें अन्दर बुला रहे हैं। आओ, मेरे साथ आओ।" सिन्दबाद घबरा गया। उसने अन्दर न जाने के लिए कई बहाने बनाये; पर कोई फ़ायदा न हुआ। बोझ मकान के पहरेदार के पास रख, वह डरता डरता गुलाम के साथ घर के अन्दर गया।

वह घर स्वर्ग के समान था। बड़े बड़े आदमियों की घर में ख़ातिरदारी हो रही थी। जहाँ देखो, वहाँ सुन्दर सुन्दर फूल रखे हुए थे। तरह तरह के इत्रों से घर महक रहा था। मेज़ पर बढ़िया बढ़िया पकवान परोसे गये थे।

अतिथियों के बीच में सफ़ेद दाढ़ीवाला एक बूढ़ा बैठा हुआ था। वह बहुत ही रौबीला जान पड़ता था।

बोझ ढोनेवाले सिन्दबाद को अपनी आँखों पर ही विश्वास न हुआ। "मैं सपना देख रहा हूँ कि स्वर्ग में हूँ" यह सोचता सोचता वह सबको झुक झुककर सलाम करने लगा। वह हाथ जोड़कर अदब से खड़ा हो गया। बूढ़े ने बड़े आदर के साथ उसको अपने पास बैठने के लिए कहा। उसके सामने भी भोजन रखा गया। खा-पीकर, जब तक उसने अपने हाथ न धो लिये, तब तक बूढ़े ने कुछ न पूछा। फिर उसने धीमे से कहा—"बेटा! अब तुम मेरे अतिथि हो। बिना किसी हिच-किचाहट के तुम यहाँ मज़ा करो। तुम्हारा नाम क्या है?"

"हुज़ूर, मैं थोड़ी मज़दूरी के लिए बहुत सारा बोझ ढोता फिरता रहता हूँ। मुझे लोग सिन्दबाद कहकर पुकारते हैं।" कुली ने सविनय बताया।

बूढ़े ने हँसकर कहा—"जानते हो, मेरा नाम भी सिन्दबाद है! नाविक सिन्दबाद! मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है

ताकि तुम अपनी कविता फिर मेरे सामने सुना सको। कविता बहुत सुन्दर थी।"

कुली सिन्दबाद ने शर्माते हुए कहा—"हुज़ूर, मै गरीब हूँ। गँवार हूँ। बड़ी मेहनत करता हूँ। इसी कारण मैंने वैसी कविता गायी थी। मेरे दुख ने मुझ से ऐसी कविता बनवायी है। अगर ग़ल्ती हो गयी हो तो आप मुझे मेहरबानी करके माफ़ करें।"

"तुम्हें उन कविताओं के लिए शर्मिन्दा होने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम मेरे भाई जैसे हो। मैं कविता सुनकर बहुत खुश हुआ हूँ। उसमें तुमने अपने दर्द का बयान किया है। मैं उसे बार बार सुनना चाहता हूँ। फिर उसको एक बार गाकर सुनाओ।" नाविक सिन्दबाद ने कहा। कुली सिन्दबाद ने ज़ोर ज़ोर से गाकर अपनी वह कविता सुनायी।

तब बूढ़े ने कहा—"मेरी भी एक अजीब कहानी है। मैं तुम्हें सुनाता हूँ। सुनो। मैंने रईस होने के लिए बहुत तकलीफ़ें झेली हैं। मेरी कहानी सुनकर तुम भी यह जान जाओगे कि मेरी ज़िन्दगी किस तरह गुज़री थी। मैंने कई कष्ट सहे, दिन-रात मेहनत की, ख़तरों का सामना किया, बदनसीबी देखी और सब इसलिए कि रुपया कमाकर बुढ़ापे में आराम से रह सकूँ। मैंने सात बार समुद्र-यात्रा की। जब किसी को मैं अपनी यात्राओं का वृत्तान्त सुनाता हूँ तो वे हैरान हो जाते हैं। पर जो किस्मत में लिखा था, वह हुआ ही, और होकर रहेगा।"

बाद में नाविक सिन्दबाद, कुली सिन्दबाद और बाकी अतिथियों को अपने अनुभवों की कहानी यों सुनाने लगा :

(कहानी का प्रारंभ अगले महीने पढ़िए)

खराबी न थी, इसलिए उन्होंने मीरा को डाँटा-डपटा भी न था। पर वह यह न जानती थी कि मीरा पर भक्ति का नशा इतनी अधिक मात्रा में चढ़ेगा।

"क्या कह रही हो, मीरा! तुम कहती हो कि शादी नहीं चाहिए। जानती हो शादी क्या चीज़ है! शादी का मामला माँ-बाप तय करते हैं। यह तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम हमारी बात मानो।" उनकी माता ने मीरा को धमकाया।

मीरा कर ही क्या सकती थीं! वे शादी के लिए मान गईं। वे जान गईं कि उनके माँ बाप उन्हें न समझ पायेंगे। उन्होंने मन ही मन निश्चय किया कि विवाह हो या न हो, वे भगवद्भक्ति में ही अपना जीवन बितायेंगी। उन्होंने भगवान के प्रत्यक्ष इसकी शपथ भी की।

थोड़े दिनों बाद उनका विवाह हो गया। उनके पति मेवाड़ के राजा के पुत्र भोजराज थे। उन दिनों मारवाड़ की राजधानी चित्तौड़ थी। चित्तौड़, राजपूत राज्यों का सिरमोर समझा जाता था। ऐसे राज्य की, बिना जाने ही मीरा रानी हो गईं थीं।

राणा को कविता का शौक था। वे स्वयं कविता किया करते थे। पति-पत्नी दोनों कई दिनों तक कविता में मस्त रहे। मीरा के दिन खुशी खुशी में गुज़रते गये। परन्तु धीमे धीमे दोनों की कविता में काफ़ी भेद दिखाई देने लगा। सिवाय भगवान की स्तुति के मीरा की कविता का और कोई विषय न होता था और उनके पति कीर्ति, विजय, इहलौकिक सुख के बारे में तुकबन्दी किया करते थे।

मीरा के व्यवहार में भी उनके पति को फ़र्क दिखाई देने लगा। वे धीमे धीमे अन्तःपुर के भोग-विलास से किनारा करने

मीरा बाई

मारवाड़ में रत्नसिंह नाम के राजा रहा करते थे। उनके एक लड़की थी, नाम था मीरा। वे बहुत सुन्दर और आकर्षक थीं। पहिले जन्म के पुण्यों के कारण वे बचपन में ही परमात्मा की भक्त बन गईं। जब वे मिट्टी की खिलौनों से खेला करती थीं, तो सभी खिलौनों में उनको कृष्ण सलोने की सूरत दिखाई दिया करती और वे तब आनन्द में मग्न हो जातीं।

ज्यों ज्यों वे उम्र में बड़ी होती गईं, त्यों त्यों उनकी भक्ति-भावना भी बढ़ने लगी। उनको सारा संसार आनन्द सागर-सा लगता, कृष्णमय मालूम होता था। भक्ति की तन्मयता में उनके मुख से अनायास सुन्दर गीत निकला करते। इन गीतों में अच्छे भाव तो होते ही थे, इसके साथ साथ कविता की अच्छी पुट भी होती थी।

मीरा बड़ी हुईं। विवाह का समय आया। जब उन्हें मालूम हुआ कि माता-पिता उनके विवाह के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, उनका खुश होना तो अलग, वे बड़ी दुःखी हुईं। उन्होंने अपना सारा जीवन भगवद्भक्ति में गुजारना चाहा था। वे संसार-समुद्र में डुबकी लगाना नहीं चाहती थीं।

उन्होंने अपनी माता के पास जाकर कहा—"माँ! मेरी बात सुनो। मनुष्य जन्म को सार्थक करने के लिए सिवाय भगवान की उपासना के कोई मार्ग नहीं है। दुःखमय संसार में डूबकर भगवान को भूल जाना अच्छा काम नहीं है। इसलिए मुझ पर कृपा करो। मेरी शादी न करो।"

यह सुन मीरा की माता हैरान हो गईं। वह जानती थी कि उनकी लड़की भगवद्भक्ति में हमेशा मस्त रहती थी। भक्ति में कोई

कुमारी आशा भटनागर

लगीं। कीमती जेवर और पोशाकों को उन्होंने छोड़ दिया। मोटे मोटे गद्दे भी छोड़ दिये। मोटा कपड़ा पहनतीं और जमीन पर चटाई बिछाकर सोतीं। वे ठीक तरह खाती भी न थीं। अपनी सहेलियों और दासियों को अपने गीत सिखातीं और अपने साथ उनको गाने को भी कहतीं।

इतने से भी उनको तसल्ली न थी। राज महल तो कुएँ के बराबर होता है। संसार विशाल है। भगवान की महिमा गाकर इस भव-सागर को पार करनेवाले कितने ही हैं। मीरा की इच्छा थी कि राजमहल से निकलकर उन सब को अपने गीत सुनायें और वे भी उनके गीत गायें।

एक दिन वे कृष्ण के मन्दिर में गयीं। वे कृष्ण की मूर्ति के सामने इतनी तन्मय होकर गायीं और नाचीं कि बेहोश होकर गिर गयीं। जब वे फिर होश में आयीं तो वे पूरी तरह बदल चुकी थीं। उन्हें यह अनुभव हुआ कि वे मानों भगवान का एक अंश स्वयं बन गयी थीं।

तब से वे रोज कृष्ण के मन्दिर में जाने लगीं। उनके मधुर गीतों को उनके मुँह से सुनने के लिए देश के चारों कोनों से भक्त आने लगे। वे मीरा के साथ कृष्ण भगवान के कीर्तन करने लगे। कई तो सब कुछ छोड़-छाड़कर भक्त बन गये।

मीरा की कीर्ति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गई। उनका यश दिल्ली के बादशाह अकबर तक भी पहुँचा। अकबर इतना उदारशील था कि हर किसी के बड़प्पन की वह प्रशंसा किया करता था। जब उसे मेवाड़ की रानी मीरा के गीतों के बारे में पता लगा तो उसने उनको स्वयं सुनना चाहा। अगर राजपूतों को मालूम होता कि वे मीरा के गीत सुनना चाहते हैं, तो

वे इब्राहम इब्राह जलने लगते, इसलिए अकबर ने इस सम्बन्ध में दरबारी गायक तानसेन की सलाह माँगी।

"अगर आप बैरागी का वेश भर लें, तो बिना किसी की अनुमति के आप स्वयं जाकर अपनी इच्छा पूरी कर सकते हैं।" तानसेन ने कहा। दोनों गेरुआ पहनकर मेवाड़ गये। कृष्ण-मन्दिर के बाहर खड़े होकर उन्होंने मीरा के गीत सुने। मीरा के गीत सुनते सुनते अकबर तन्मय हो गया। अन्त में उसने मीरा के पाँव पकड़कर कहा—"माँ! मुझे मोक्ष का मार्ग दिखाओ।"

"बेटा! हमेशा भगवान का ध्यान करते हुए पापरहित जीवन व्यतीत करते रहो।"—मीरा ने कहा।

अकबर ने गले में से एक मोती का हार निकालकर, मीरा के पाँव पर रख उनसे उसे स्वीकार करने की प्रार्थना की।

बैरागी के पास इतना कीमती हार देख कर मीरा भौंचक्का हो गयीं। उन्होंने पूछा—"बेटा, तुम्हें यह कहाँ से मिला! तुम तो तपस्वी मालूम होते हो।"

"माँ! जब मैं यमुना में स्नान कर रहा था तब मुझे यह हार मिला।

तपस्वी को इसकी क्या ज़रूरत! आप इसे ले लें"—अकबर ने कहा।

मीरा ने वह हार लेकर कृष्ण के गले में डाल दिया। राणा को तो पत्नी का रवैय्या बिल्कुल पसन्द नहीं था। उनका ख़्याल था कि जो कुछ मीरा कर रही थीं, वह मेवाड़ की महारानी को शोभा नहीं देती थी। तिस पर उनको मोती की माला के बारे में भी मालूम हो गया। उन्होंने माला मँगवाकर जाँच-पड़ताल की। उसकी क़ीमत कम से कम दस लाख रुपये की थी। इतना क़ीमती हार कौन आकर दे सकता है! राणा के एक दरबारी ने कहा कि उसने अकबर बादशाह को वह हार ख़रीदते देखा था। राणा ने अपने भेदियों से भी मालूम किया कि उनकी पत्नी को वह हार अकबर बादशाह दे गये थे। वे बहुत शर्मिन्दा हुए। मीरा के कारण मेवाड़ की बदनामी हो रही थी। इसलिए राणा ने उनको तुरन्त मार डालने की आज्ञा दी।

पर उनको कौन मारता? बहुत सारे रुपये का लालच दिया गया, पर कोई भी उनको मारने के लिए तैयार न हुआ। मीरा की पवित्रता के मुक़ाबले में राणा की

आज्ञा किस काम की थी! राणा उनको मरवा न सके। निराश हो, उन्होंने उनको एक काली कोठरी में बन्द करवा दिया। मीरा इस पर भी दुःखी न हुईं। काली कोठरी में भी, वे अपने आनंद में मस्त थीं। गीत गा-गाकर समय काटतीं।

पर राणा की आँखों में मीरा का जीना ही खटक रहा था। उन्होंने उनके पास एक कटोरे में विष भिजवाया। भगवान का नाम लेकर मीरा ने वह विष पी भी लिया। विष उनका कुछ न बिगाड़ सका। एक टोकरे में सांप रखकर, मीरा के पास उन्होंने यह कहकर भिजवाया कि उसमें चन्द्रहार है। टोकरी खोलते ही साँप ने फन उठाकर मीरा को काटा। मीरा ने निडर हो उस साँप को अपने गले में डाल लिया।

जब राणा को मालूम हुआ कि मीरा को मारने के उनके दोनों यत्न निष्फल हो गये हैं, तो उन्होंने अपनी पत्नी के पास खबर भिजवायी—"तुम आत्म-हत्या कर लो। यह मेरी आज्ञा है।" मीरा इसके लिए मान गयीं और अपने पति को एक बार देखने की इच्छा प्रकट की। पर राणा न माने। "अच्छा तो मैं आत्म-हत्या कर लूँगी"—मीरा ने कहा। उनको काली कोठरी में से छोड़ दिया गया।

परन्तु दिन-दहाड़े आत्म-हत्या नहीं की जा सकती थी। हज़ारों आदमी नगर में ऐसे थे, जो उनको अपने प्राणों से भी अधिक मानते थे। इसलिए वे आधी रात को अकेली बाहर निकल गयीं। जाते जाते उनको रास्ते में एक नदी दिखाई दी। वे उसमें कूद पड़ीं। उस समय भी वे भगवान का ध्यान कर रही थीं।

नदी में डूबने के बाद उनको ऐसा लगा, जैसे उनके सामने कोई चीज़ चमक

रही हो। उनको लगा, कोई कान में कह रहा हो "तू पति की आज्ञा पर आत्म-हत्या कर रही है। अब तेरा पुनर्जन्म हुआ है। तू जनता में जाकर भगवद्भक्ति का प्रचार कर।"

अब उन्होंने आँखें खोलकर देखा तो वे नदी के किनारे पड़ी हुई थीं। परन्तु वह जगह वह न थी, जहाँ वे नदी में कूदी थीं। अन्धकार भी न था। सूर्य जोर से चमक रहा था। नदी में जो प्रकाशमान दृश्य उन्होंने देखा था, मीरा न भूल पायीं। वे उठ खड़ी हुईं और अपने गीत गाती हुई खेतों में निकल गईं।

थोड़ी दूर जाने के बाद मीरा को कुछ चरवाहे दिखाई दिये। उनसे उन्होंने वृन्दावन का रास्ता पूछा। चरवाहों ने उनको पीने के लिये दूध दिया, उनके साथ जाकर थोड़ी दूर तक वृन्दावन का रास्ता भी दिखाया। गाँव गाँव वे अपने गीत गाती चलती जातीं, उनके पीछे लोगों की भीड़ लग जाती, और वे भी, उनके साथ भक्ति में तल्लीन हो जाते। कई तो घर-बार छोड़कर उनके पीछे पीछे चलने लगे। कई सारे भक्तों को साथ लेकर मीरा वृन्दावन पहुँचीं।

वृन्दावन में रूप गोसाईं नाम का एक तपस्वी रहा करता था। उनको स्त्रियों और सोने से बहुत नफ़रत थी। वे कहा करते थे कि जो कोई इन दोनों को अपने पास रखेगा, वह मोक्ष का अधिकारी न होगा। रूप गोसाईं के विषय में मीरा को भी मालूम हुआ। उन्होंने उनके पास यह सन्देश भेजा—"महाशय! वृन्दावन में श्री कृष्ण ही एक पुरुष हैं, बाकी सब गोपियाँ हैं। और आप पुरुष हैं। आपका यहाँ रहना अच्छा नहीं। इसलिये तुरन्त चले आइये।" यह सुन रूप गोसाईं

बहुत आनन्दित हुआ। उन्होंने मीरा को बुलवा भेजा। वे दोनों मिलकर, एक दूसरे को गुरु मान उपदेश देने लगे। मीरा ने गीत गाना नहीं छोड़ा। उनके गीतों का प्रचलन सारे देश भर में हो गया। पहिले पहल, चित्तौड़ में हर किसी को मीरा के गीत गुनगुनाता देख, राणा नाराज हुए, मगर बाद में पछताने लगे। उनका राज्य बहुत छोटा था, पर मीरा एक बड़े साम्राज्य की रानी थीं। उनके सामने उनकी क्या हस्ती थी?

चित्तौड़ से हजारों लोगों को मीरा के दर्शन के लिये वृन्दावन आता-जाता देख, राणा भी मामूली पोशाक पहिनकर अकेला वृन्दावन के लिये रवाना हुए। वृन्दावन पहुँचकर, मीरा के निवासस्थान के सामने जाकर कहा—"भिक्षांदेहि" मीरा ने कहा—"मैं स्वयं भिखारिन हूँ, सिवाय आशीर्वाद के मैं और कुछ नहीं दे सकती।"

"मैं तुम्हारी एक मदद चाहता हूँ।"—राणा ने कहा।

"क्या मदद चाहते हो!"—मीरा ने पूछा।

"मुझे क्षमा कर दो।"—कहते हुए राणा ने अपनी पोशाक हटा दी।

अपने पति को देखकर मीरा बहुत प्रसन्न हुईं। उनको पति पर लेशमात्र भी क्रोध न था। वे राणा के साथ चित्तौड़ वापिस चली गईं। वे तब से वर्ष में छः महीने चित्तौड़ में और छः महीने वृन्दावन में रहतीं।

मीरा चार सौ वर्ष पहिले जीवित थीं। पर उनके गीत अब भी जीवित हैं, वे सदा की भाँति आज अमर हैं; और रहेंगे। उनको सुनकर और पढ़कर लाखों भक्त तन्मय हो चुके हैं और होते रहेंगे।

मित्र-भेद

दमनक बोला—"देखो करटक!
स्वामी अभी बहुत है भीत,
इसीलिए अब जाकर पहले
करनी हैं बातें सप्रीत।

किसी तरह स्वामी के भय का
लेना ही है कारण ज्ञान,
जिससे बुद्धि-कुशलता अपनी
दिखलाकर पायें सम्मान!"

करटक ने पूछा झट—"लेकिन
कैसे लें हम यों ही मान
स्वामी है भयभीत भला तो
क्या है इसका कहो प्रमाण?"

हँसकर बोला दमनक—"भाई,
नहीं बहुत मुश्किल यह बात,
भाव प्रकट होते प्राणी के
आचरणों से ही दिन-रात।

पढ़ लेते हम मुख-दर्पण में
कभी किसी के मन का राज,
सुना इशारों में आता है
कोई अंतर की आवाज़।

चढ़ी हुई आँखों की लाली
या भौंहों की बंकिम रेख,
बता यही देती हैं बरबस—
क्या हूँ मैं अब ले यह देख!

स्वामी जल पीने उतरा था
हुआ अचानक लेकिन भीत,
काँप उठा इस गर्मी में भी
जैसे उसे लगा हो शीत।

निश्चय ही वह डरा हुआ है
नहीं मुझे इसमें संदेह,
जाता मैं अब काम साधने
निर्भय हो स्वामी के गेह।"

बोला करटक—"नहीं तुम्हें हैं
नियम राज-सेवा के ज्ञात,
कहो करोगे कैसे फिर तो
स्वामी को वश में हे भ्रात!"

'भारतीभक्त'

उत्तर दिया चतुर दमनक ने—
"निश्चय मुझे सारे हैं ज्ञात,
खेल खेल में सिखा गये सब
बुढ़पन में ही मुझको तात।

अच्छी कला राज-सेवा है
जिसमें मैं हूँ बहुत प्रवीण,
देख मात्र ही लोगे तुम भी
है न बुद्धि-बल मेरा क्षीण।"

"जाकर वहाँ कहोगे क्या क्या?"—
सुनकर करटक की यह बात,
कहा तुरत दमनक ने उससे—
"तुम भी करते कैसी बात!

बीज अंकुरित होते खुद ही
जब गिरती वर्षा की धार,
फूलों के खिलते ही करने
लगते हैं भँवरे गुंजार।

जब वसंत-सुषमा उठती है
डाल-डाल पर कोयल कूक,
सुनकर जिसको भर जाती है
विरही के प्राणों में हूक।

चंदा को लखते ही सागर
हो जाता उन्मत्त अधीर,
कवि का व्याकुल हो उठता मन
जब बहता मृदु मलय समीर।

इसी तरह जब छिड़ जाता है
चतुर जनों में वार्त्तालाप,
वाक्य निकलने लगते मुख से
नये नये अपने ही आप।

चित्र - कथा

एक दिन जब दास और वास ने स्कूल में प्रवेश किया, तो मास्टर जी श्रीनिवास की ग़ैर-हाज़िरी पर आग बबूला हो रहे थे। पर उसकी स्लेट तो वहीं रखी हुई थी। अध्यापक जी की अनुमति लेकर दास और वास श्रीनिवास की खोज में निकले। पहले दास और वास ने श्रीनिवास की स्लेट सूंघने के लिए 'टाइगर' के सामने रख दी। तब 'टाइगर' दौड़कर आम के बगीचे में गया और एक पेड़ के पास जाकर भौंकने लगा। श्रीनिवास पेड़ के ऊपर डालियों पर छुप बैठा था। अध्यापक जी ने 'टाइगर' की बड़ी प्रशंसा की और फिर श्रीनिवास को लेकर स्कूल की तरफ़ चले।

मैं बोलूँगा समय देखकर
वचन पिता के मुझको याद,
जो न बोलता समय देखकर
पछताता ही है वह बाद।"

करटक ने फिर कही बात यह—
"होते हैं राजा अति क्रूर,
प्रसन्न रहें तो ठीक अन्यथा
कर देते किस्मत ही चूर।

बात बात पर हुआ अतुल तो
बात बात में भीषण क्रोध,
मनमानी करते जायेंगे
सह पायेंगे नहीं विरोध।

ऐसों से तो हमें बचायें,
घट-घट के वासी भगवान;
सदा प्राण पर रहता खटका
रहता खतरे में ईमान!"

सुन करके यह दमनक बोला—
"कहते तो तुम हो ही ठीक,
किंतु चतुर जो होते हैं वे
चलते हैं कुछ न्यारी लीक।

कर लेते स्वामी को वश में
बन उनकी इच्छा के दास,
दुख में, सुख में, हँसी-खुशी में,
सदा उपस्थित रहते पास!"

कर प्रणाम उसको तब दमनक
चला वेग से झट उस ओर,
जहाँ पिंगलक चिंता में था
लाल किये नयनों की कोर!

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अक्तूबर १९५६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. १० अगस्त के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

अगस्त – प्रतियोगिता – फल

अगस्त के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो :
'आओ, आओ तुम्हें खिलायें!'

दूसरा फ़ोटो :
'आपस में हम मेल बढ़ायें!!'

प्रेषक : श्री विजय कुमार गुप्ता, ५१८५, बसन्तरोड, पहाड़ गंज, नई दिल्ली.

ताश का पत्ता चुनना

एक निश्चित ताश के पत्ते को चुनना भी एक लोकप्रिय जादू है। नीचे दिया गया तरीका, सब से अधिक आसान है।

अगर आप ताश के पत्ते के पिछली ओर देखें, तो आप पायेंगे कि वे दो प्रकार के हैं। (अ) एक डेकवाले (आ) दो डेकवाले। 'A' चित्र में चार तरह के कार्ड दिये गये हैं। दूसरी पंक्ति में इन पत्तों को उल्टा दिया गया है। अब इनको देखने से मालूम होगा कि (१-३) चित्र नहीं बदले हैं, जब कि २-४ चित्र बदल गये हैं। इस तरह जो पत्ते (२-४) बदल गये हैं, वे एक डेकवाले कहे जाते हैं। और वे पत्ते जो नहीं बदले (१-३) दो डेकवाले कहलाते हैं।

इस जादू के लिए एक डेकवाले ताश के पत्ते लीजिए, और उनको एक ढंग से रखिए। यानी सब फूल, जैसा कि चित्र 'B', में दिखाया गया है, एक सिरे पर हों, और एक पंक्ति में हों। इस तरह पत्ते रखकर
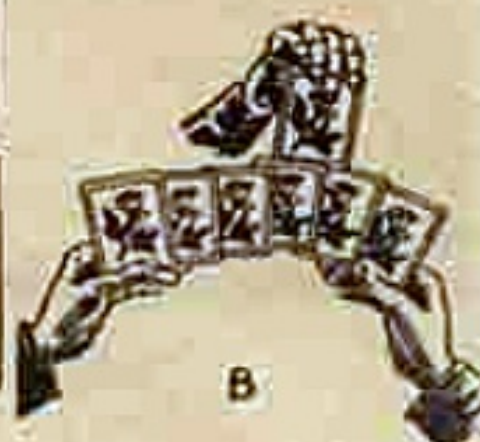
जादूगर दर्शकों में से एक को एक पत्ता चुनने के लिए कहता है। इस प्रकार चुना हुआ पत्ता, 'B' चित्र में दिखाया गया है। जब दर्शक इस पत्ते को देखने में व्यस्त होते हैं, तो जादूगर अपने हाथ के बाकी पत्तों को उलट देता है और दर्शक को वह पत्ता लौटाने के लिये कहता है। सिवाय दर्शक के पत्ते के बाकी सब पत्ते उलट दिये गये हैं। इस तरह ताश के पत्तों में खास पत्ते का पता लगाना कोई कठिन काम नहीं है। क्योंकि यह ही एक पत्ता होगा, जिसका फूल सीधा होगा।

अब यह साफ़ है कि क्यों यह जादू एक डेकवाले पत्तों से किया जाता है! अब इसको "ग्रेट मुग़ल" और "कारवान" के पत्तों से कैसे किया जाय! कुछ जादूगर पत्तों के एक सिरे पर स्याही से निशान लगा देते हैं और कुछ पेन्सिल से। इस तरह पत्तों को एक डेकवाला बनाते हैं।

रंगीन चित्र-कथा

एक दिन का राजा—७

खलीफ़ा अबू की अच्छी तरह देख-भाल करता। अबू अपनी बातों से खलीफ़ा का मनोरंजन किया करता। वह खलीफ़ा के अन्तःपुर में जाता। रानी जुबेदा से भी मिलता-जुलता। होते होते वह मन्त्री जाफ़र से भी खलीफ़ा का अधिक विश्वासपात्र हो गया। उसे घमंड न चढ़ा था। जब रानी ने यह देखा कि गजा

और अबू आपस में आँखें मिलाते रहते हैं तो उसने खलीफ़ा से कहा कि उन दोनों की शादी कर देना अच्छा होगा। दोनों से खलीफ़ा ने इस बारे में पूछा, और उनकी धूमधाम से शादी भी कर दी।

दोनों ने मज़े से कुछ दिन काटे। गजा क्योंकि राजमहल में पैदा और बड़ी हुई थी, इसलिये वह महल के भोग-विलासों की आदी हो गयी थी। भोग-विलास में, अबू की सारी धन-दौलत भी काफ़ूर हो गयी।

"न आगे देखा न पीछा; जितना पैसा था, सब खर्च कर दिया। खलीफ़ा से कोई माहवार वेतन तो मिलता नहीं! अब क्या करें!"—अबू ने अपनी पत्नी से पूछा।

"मैं रानी जुबेदा से भी माँगना नहीं चाहती। तुम कोई तरीका बताओ।"—गजा ने कहा।

एक ही तरीका है। हम दोनों आत्म-हत्या कर लें।"—अबू ने कहा।

"बाप रे बाप! मैं नहीं मरना चाहती। चाहते हो तो तुम ही यह तरीक़ा बरतो।"—गजा ने कहा।

"औरतों में रत्ती भर अक़्ल भी नहीं

होती। इसीलिये मैं इतने दिनों से ब्रह्मचारी था। क्या कह रहा हूँ, क्यों कह रहा हूँ, समझती क्यों नहीं! मर जायेंगे तो हमें पैसा कैसे मिलेगा! हमें सिर्फ़ यह दिखाना है कि हम मर गये हैं। बस!"—अबू ने कहा।

"वह कैसे!"—गन्ना ने पूछा।

"सुनो, मैं मक्का की ओर पैर रख सो जाऊँगा। तुम मेरे मुँह पर दुपट्टा ओढ़ दो। तब खूब रोते-धोते जुबेदा रानी के पास जाकर कहो कि मैं मर गया हूँ। यह कहकर मूर्छित हो जाओ। जब तक तुम पर घड़ों गुलाब जल न उड़ेला जाय, तब तक न उठना। तब तुम ही देखना कि तुम पर कैसे पैसा बरसता है!"—अबू ने कहा।

"हाँ! यह तो हमारे बस की बात है।" गन्ना ने अबू के सिर पर पगड़ी बाँध उसका मुँह दुपट्टे से ढाँप दिया और रोती-धोती वह रानी के पास दौड़ी। "पति की मौत" की खबर सुना वह गिर गई।

उसकी मुसीबत देख, रानी और उनकी दासियों ने आँसू बहाये। गन्ना पर गुलाब जल छिड़ककर, उसे जगाकर उन्होंने आश्वासन दिया। रानी ने खजांची को बुलाकर कहा—"इसके क्रिया-कर्म के लिए मेरे हिसाब से दस हजार दीनारें लेकर तुरत गन्ना के घर में जाओ।"

गन्ना धीमे धीमे सांस लेने लगी। रानी की अनुमति पा, वह अपने घर चली आई। तभी खजांची भी दस हजार दीनारों की थैली लेकर पहुँचा।

गन्ना के दरवाज़े बन्द करने पर अबू उठ बैठा। "इस बार तुम मरने का बहाना करो और मैं जाकर पैसा लाऊँगा।"—अबू ने कहा।

[अभी और है]

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और वह मैं लेकर रहूँगा!" यह मंत्र स्व. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने आज से ५० वर्ष पूर्व हमको दिया। आज उनका वह स्वप्न पूर्ण हुआ है,—देश में स्वराज्य की स्थापना हो चुकी है।

२३ जुलाई १८५६ को तिलक का जन्म रत्नगिरि में हुआ। उनके पिता का नाम गंगाधर पंत और माता का नाम पार्वती बाई था। गंगाधर-पार्वती ने अपने इकलौते बेटे का नाम केशव रखा। लेकिन प्यार से 'बाल' कहकर पुकारते थे। वही नाम प्रचलित हुआ।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

लोकमान्य का जन्म रत्नगिरि में हुआ: लेकिन वे 'पूना के राजा' कहलाये, ठीक उसी तरह जैसे भगवान कृष्ण का जन्म तो मथुरा में हुआ, लेकिन वे द्वारकाधीश कहलाये।

तिलक की प्रारंभिक शिक्षा रत्नगिरि में हुई और बाद की पूना में। तिलक को उनके पिताने घर पर ही संस्कृत और गणितशास्त्र पढ़ाया। दस साल की उम्र में जब वे पूना के स्कूल में दाखिल हुए, तब उनका संस्कृत, बीजगणित (आल्जीब्रा) और रेखागणित (जामेट्री) का ज्ञान देख कर सभी अध्यापक दंग रह गये।

तिलक के पिताजी संस्कृत के श्लोक याद कर सुनाने पर थे इनाम में पैसा देते थे। एक बार हिसाब लगाने में कमाल दिखाने पर तिलक ने इनाम में बाणभट्ट की 'कादंबरी' माँग ली थी।

एक और घटना है। स्कूल में अध्यापक इमला लिखा रहे थे। उसमें 'संत' शब्द तीन बार आया। तिलक ने हर बार उसे अलग अलग ढंगसे लिखा—(१) संत, (२) सन्त और (३) सन्‌त। अध्यापक ने पहले को सही माना और दूसरे तथा तीसरे को ग़लत। तब तिलक अध्यापक से उलझ पड़े। यहाँ तक कि मामला हेड मास्टर साहब तक पहुँच गया। आखिर तिलक की ही जीत हुई।

सोलह वर्ष की अवस्था में ही तिलक का ब्याह हुआ। ब्याह के समय तिलक ने दहेज लेने से इनकार कर दिया था। उन्होंने अपने पिताजी से कहा—"ज़रूरी और उचित रस्मों को छोड़ बाकी रस्मों में जितना रुपया खर्च करने का निश्चय किया गया है, उतने रुपयों की किताबें खरीदकर मुझे दी जाएँ!"

कालेज में भरती होने के समय तिलक की तन्दुरुस्ती बहुत ख़राब थी। देश की सेवा करने के हौसले उनके मनमें उठ रहे थे। मगर शरीर दुबला-पतला और कमज़ोर था। इसलिये उन्होंने सबसे पहले शरीर को तन्दुरुस्त बनाने का निश्चय किया। सारा समय खेल-कूद और कसरत में बिताते। ताश-शतरंज जैसे खेल उन्हें बिलकुल पसंद न थे। अखाड़े में दंड-बैठक और कुश्ती खेलना उन्हें अधिक पसंद था। नतीजा यह हुआ कि प्रथम वर्ष की परीक्षा में वे फेल हो गये। लेकिन स्वास्थ्य की परीक्षा में वे सफल हो गए।

तिलक ने बी. ए. पास कर लेने के बाद एल. एल. बी. की परीक्षा भी पास की। सरकारी नौकरी करने के बजाय राष्ट्रीय शिक्षा की नींव डालने के उद्देश्य से उन्होंने विष्णुशास्त्री चिपलूनकर और आगरकरजी के सहयोग से पूना के प्रसिद्ध 'न्यू इंग्लिश स्कूल' की और बाद को 'फर्ग्यूसन कालेज' की स्थापना की।

तिलक ने जनता की शिक्षा के लिये 'केसरी' मराठी में, और 'मराठा' अंग्रेज़ी में, अखबार शुरू किये। इन अखबारों में लिखे अपने लेखों के कारण तिलक को दो बार जेल भी काटनी पड़ी। किन्तु उनका अदम्य उत्साह दिन दूना रात चौगुना बढ़ता ही गया और 'केसरी' की दहाड़ से ब्रिटिश राज काँप उठा।

तिलक ने जनता में एकता और संगठन स्थापित करने के लिये सार्वजनिक

गणेशोत्सव और शिवजयन्ती उत्सव (शिवाजी की जयंती) शुरू किये। इन उत्सवों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब जाति-भेद भूलकर एक झंडे के नीचे एकत्रित हुए।

वैसे कांग्रेस की स्थापना १८८५ में ही हुई; किन्तु तिलक कांग्रेस में शामिल नहीं हुए। क्योंकि कांग्रेस के सामने कोई क्रांतिकारी कार्यक्रम नहीं था। १९०५ के बंग-भंग के बाद कांग्रेस में प्रवेश कर तिलक ने देश को स्वराज्य का मंत्र और उसकी प्राप्ति के लिये स्वदेशी और विदेशी वस्तु-बहिष्कार का कार्यक्रम दिया। स्वर्गीय लाला लाजपतराय और विपिनचंद्र पाल ने इस कार्यक्रम में उनका साथ दिया। लाल, बाल और पाल की त्रिमूर्ति की धाक भारत भर में जम गयी।

ब्रिटिश सरकार ने तिलक पर राजद्रोह का इल्ज़ाम लगाकर छः साल की सज़ा दी और मांडले (बर्मा) भेज दिया। वहीं पर इस कर्मयोगी ने "गीता रहस्य" लिखा। केसरी के लेखों के कारण पहले वे दो बार जेल जा चुके थे। उस समय उन्होंने 'ओरियन' और 'आर्किटिक होम इन दी वेदज़' नाम के विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ दुनिया को दिये थे। उन ग्रंथों को पढ़कर जर्मन विद्वान मेक्समूलर इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने विक्टोरिया रानी को पत्र लिखा—"ऐसे विद्वान को जेल में रखना मानव-जाति का अपमान करना है!" फलस्वरूप तिलक को तुरन्त रिहा किया गया।

मांडले में छः साल की सज़ा काटकर १९१५ में लोकमान्य देश में वापस आये। तिलक ने स्व. डॉ. एनी-बीसेंट के सहयोग से 'होमरूल' का आन्दोलन शुरू किया। जनता के हृदय पर तिलक का प्रभाव इतना पड़ा कि वे बेताज के बादशाह, 'लोकमान्य' हो गये।

१ अगस्त १९२० के दिन भारत के इतिहास में सुवर्णाक्षरों से लिखा जायगा। उसी दिन महात्मा गांधी ने देश में असहयोग आंदोलन का प्रारंभ किया था। तिलक ने उस आन्दोलन में गांधीजी का साथ दिया। आखिर लोकमान्य का स्वप्न महात्मा गांधीजी के हाथों पूर्ण हुआ। आज ये दोनों महापुरुष हम लोगों के बीच में नहीं हैं। किन्तु स्वर्ग से वे सदा हमको प्रेरणा देते रहेंगे।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press (Private) Ltd., and Published by him for Chandamama Publications, from Madras 26—Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

Photo by P. K. Patel

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'आपस में हम स्नेह बढ़ाएँ !'

प्रेषक : विजय कुमार गुप्ता, नई दिल्ली

CHANDAMAMA (Hindi) AUGUST 1956 Regd. No. M. 5452